(देश देशान्तरों में प्रचारित, उच्च कोटि का अध्यात्मिक मासिक-पत्र)

वार्षिक मू० ३॥) एक अंक का ।)

सन्देश नहीं मैं स्वर्ग लोक का लाई ।
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आई ॥

सम्पादक—पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, सहा० सम्पा०—प्रो० रामचरण महेन्द्र एम० ए०

वर्ष ८ | मथुरा, १ फरवरी सन् १९४७ ई० | अंक २

"आत्म निर्माण" सबसे बड़ा पुण्य परमार्थ है

इस संसार में अनेक प्रकार के पुण्य और परमार्थ हैं शास्त्रों में नाना प्रकार के धर्म अनुष्ठानों का सविस्तार विधि विधान है और उनके सुविस्तृत महात्म्यों का वर्णन है। दूसरों की सेवा सहायता करना पुण्य कार्य है इससे कीर्ति आत्म संतोष तथा सद्गति की प्राप्ति होती है। पर इन सबसे भी बढ़कर एक पुण्य परमार्थ है और वह है—'आत्म निर्माण'। अपने दुर्गुणों को, विचारों को, कुसंस्कारों को ईर्षा, तृष्णा, क्रोध, द्रोह, लोभ, चिन्ता, भय एवं वासनाओं को विवेक की सहायता से आत्मज्ञान की अग्नि में जला देना इतना बडा धर्म है जिसकी तुलना सहस्र अश्वमेधों से नहीं हो सकती। अपने अज्ञान को दूर करके मन मन्दिर में ज्ञान का दीपक जलाना भगवान की सच्ची पूजा है। अपनी मानसिक तुच्छता, दीनता, हीनता, दासता को हटाकर निर्भयता, सत्यता, पवित्रता एवं प्रसन्नता की आत्मिक प्रवृतियां बढाना करोड मन सोना दान करने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हैं।

हर मनुष्य अपना अपना आत्म निर्माण करे तो यह पृथ्वी स्वर्ग बन सकती है। फिर मनुष्यों को स्वर्ग जाने की इच्छा करने की नहीं वरन् देवताओं को पृथ्वी पर आने की आवश्यकता अनुभव होगी। दूसरों की सेवा सहायता करना पुण्य है पर अपनी सेवा सहायता करना इससे भी बडा पुण्य है। अपनी शारीरिक मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक स्थिति को ऊंचा उठाना, अपने को एक आदर्श नागरिक बनाना, इतना बडा धर्म कार्य है जिसकी तुलना अन्य किसी भी पुण्य परमार्थ में नहीं हो सकती।

अखंड ज्योति प्रेस फण्ड के लिये पाठकों की श्रद्धाञ्जलियां

३२।।) श्री रघुवीरप्रसाद मोहनलाल कटनी
३१) श्री श्रीकिशन चितलांग्या राजनांद गांव
२५) ,, खिमजीभाई नरभैराम पौनी
२४) ,, रमेशचन्द्र दुबे हटा
२२।।) ठा० मिहीपालसिंह जी ताल्लुकेदार निन्दीपुर
११) श्री सत्यनारायण जी ओझा सवाई माधोपुर
१०) ,, राजनरायण जी श्रीवास्तव कानपुर
७।।) बाबा कैलासदास जी बेगमगंज
७) ठा० मोतीसिंह जी उमरकोट
५।।=) श्री पूरनचन्द जी ओमर हटा
५) पं० जगन्नाथप्रसाद शर्मा, बगरु
५) श्री केशवलाल प्रभूदास चौकसी अहमदाबाद
५) श्री रनछोरदास सांकलचन्द जवेरी अहमदाबाद
५) श्री मदनलाल कोठारी देशनोक
५) चौ० इन्द्रमनि शर्मा रईस कसेरू
५) श्री प्यारेलाल शर्मा सींलचर
५) श्री कुन्दनलाल कक्कड़ रावल पिंडी
५) श्री सुगनलाल नरायनदास लाहेजा कराची
५) श्री गनपतराय सेठी लाडनूं
५) श्री कल्यानमल व्रजमोहनलाल राजनन्द गांव
५) श्री मूलचन्द रामप्रताप शर्मा राजनांद गांव
५) श्री देवजी मूलचन्द महाजन ,,
५) गंगाप्रसाद जोशी उदयपुर
५) ,, भीखमचन्द शारदा राजनांदगांव
४।।) पं० रामशिरोमणि त्रिपाठी नाकारामपुर
४।।) श्री लक्ष्मीनारायन विश्वकर्मा कटनी
४) श्रीमती ब्रह्मावती देवी बारा
४) श्रीमती पूर्णिमा गुप्ता गाजियाबाद
४) श्री सूरजप्रसाद स्वर्णकार जबलपुर
३।-) कुंवर बी० ए० लोढा गोहेरा
२।।) बा० केदारनाथ गोयल रानियां
२।।) पं० रामशंकर अवस्थी खागा
२।।) श्री डी० एन० चावान बम्बई
२।।) श्री बी० एस० नेगी हरबटपुर
२।। श्री भुवनेश्वर प्रसाद मिश्रा रोहिनी
२।।) श्री द्वारिकाप्रसाद साव कमरहट्टी
२।। डाक्टर बी० डी० बमा मंझना
२।।) पं० रामनरायन मिश्रा कामठी
२।।) श्री उदितनरायनलाल भागलपुर
२।।) वैद्य गंगाप्रसाद जी स्वर्णकार हटा
२।।) श्री देवीप्रसाद श्रीवास्तव देहली
२।।) श्री पूरनलाल बढोनिया भाजीपानी
२।।) डाक्टर शिवरतनलाल त्रिपाठी
२।।) पं० विजयनाथ सनाढ्य बिजौलिया
२।।) श्री परसराम गुप्ता कानपुर
२।।) श्री हीरासिंह जी नेपाल
२।।) ,, हरसहाय बौहरा खबा
२।।) ,, डी० साहु हैडमास्टर बारगढ
२।।) पं० ज्वालाप्रसाद मिश्रा सौठन
२।।) ,, विश्वेश्वरदयाल भरथना
२।।) महात्मा प्रेमप्रकाश तेजसिंह खेडा
२।।) स्टेट मिडिल स्कूल के छात्र श्री डूंगरमल
२।=) श्री हुकमचन्द गंगराडे कलमखार
२) श्री गनेशप्रसाद गुप्ता दमोह
२) ,, बिपनबिहारी शि० बलोद
२) ,, पारसनाथप्रसाद बरगछिंयरा
२) ,, मोतीलाल झंवर श्री डूंगरगढ
२) ,, रामलाल तिलोकचन्द झंवर श्री डूंगरगढ
२) ,, बालचन्द सन्तोकचन्द शाहपुरा
२) पं० विष्णुदत्त लादूराम विरक्त कैरू
२) श्री नन्दराम लोधी राजपूत बिहूनी
२) ,, कृष्णलाल खर्वन्दा रावलपिंडी
२) ,, जयदेव सूरी ,,
२) ,, लोकनाथ रुद्र ,,
२) ,, गनेश स द स० इ० पुलिस चूरू
२) ,, कंवर अयोध्यासिंह बंस पुरवा
२) ,, व्रजमोहनलाल जोशी राजनांदगांव
२) पं० भद्रदत्त शर्मा सिकन्दरपुर
२) श्री मोतीलाल लुकड अंजड

मथुरा १ फरवरी सन् १९४७ ई०

योग के नाम पर मायाचार।

योग, अध्यात्म, और धर्म की ओर अपनी प्रवृत्तियां आरम्भ काल से ही रही हैं इन प्रवृत्तियों की प्रेरणा से सत्य की शोध करने के उद्देश्य से भारत वर्ष के एक कोने से दूसरे कोने तक यात्राएं करने के अवसर हमें मिले हैं। लगभग दस वर्ष इस पर्यटन में लगा रहना पड़ा है।

इस समय में अच्छे बुरे सभी प्रकार के अनुभव हमें हुए। सच्चे, ज्ञानी तपस्वी सिद्ध पुरुषों से यह पुण्य भारत भूमि खाली नहीं है। सच्चे आध्यात्मिक पुरुष भी हमें पर्याप्त संख्यामें मिले उनका अनुग्रह, स्नेह एव आत्मभाव प्राप्त करने का सौभाग्य भी हमें मिला। उनका वर्णन पाठकों को अन्यन्त्र मिलेगा, इन पंक्तियों में हम उन लोगों की चर्चा करेंगे जो वास्तव में असाधु हैं पर साधुओं के दल में आमिले हैं। और उनने साधु जैसे पुनीति शब्द को बदनाम किया है।

गौ की खाल ओढ कर गधा कुछ समय तक लोगों को धोखा दे सकता है, सिंह का चर्म पहन कर शृगाल कुछ समय तक दूसरों को भ्रम में डाल सकता है, पर

उघरे अन्त न होहि निबाहू।
कालनेमि जिमि रावण राहू॥

ऐसे व्यक्तियों की पोल खुलकर रहती है। असत्यका पर्दाफाश होकर रहता है। जब तक जहां अज्ञान है, तब तक तहां ऐसे लोगों की दाल गलती है पर जब विवेक, तर्क और परीक्षण का प्रकाश होने लगता है सत्यासत्य की शोध करने की बुद्धि जाग पडती है तो ऐसे लोगों का दंभ प्रकट होजाता है रात्रि के अन्धकार में उल्लू चमगीदड तथा अन्य निशाचर किलोल करते हैं, सूर्य नारायण का प्रकाश प्रकट होते ही वे मुंह छिपा कर बैठ जाते हैं इसी प्रकार अज्ञान के अन्धकार में किलोल करने वाले इन निशाचरों का भी अन्त होना निश्चित है।

मायावी लोगों ने किसी भी क्षेत्र का अछूता नहीं छोडा है। उन्हें जहां कहीं भी जरा सी आड मिलजाती है छिप बैठते हैं। अनेकों चोर, उठाई-गीरे, डाकू, हत्यारे, ठग, दुराचारी, व्यसनी, नशेबाज एवं हरामखोर मनुष्य कानूनी पकड तथा जनता की आंखों से बचने के लिए पवित्र साधु वेश में आछिपते हैं और इस आड में बैठे बैठे मौज करते रहते हैं। खुराफाती दिमागों में यह विशेषता होती है कि वे चुप नहीं बैठ सकते। गुलछर्रे उडाने के लिए उनका दिमाग कोई न कोई तरकीब ढूंढ निकालता है। सन्तवेश की आड में छिप बैठने से ही उन्हें सन्तोष नहीं होता वे आगे धावा बोलते हैं और जनता के भंडार से यश तथा धन की लूट मचादेते हैं।

इस लूट के लिए वे अपना प्रधान हथियार चमत्कारों को बनाते हैं। योग शास्त्रों में ऐसे वर्णन आते हैं कि योगियों को ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होती हैं और वे अलौकिक चमत्कारी करतब दिखा सकते हैं, यह उक्ति न केवल पुस्तकों में वर्णित है वरन् जन साधारण में इसका विश्वास भी बहुत गहरा जमा हुआ है। इस स्थिति से लाभ उठाकर धन और यश लूटने के लिए धूर्तलोग अपने आपको पहुँचा हुआ सिद्ध साबित करने का प्रयत्न करते हैं। चूंकि उनका तप तो होता नहीं त्याग, वैराग्य, साधना और तपश्चर्या के बिना सच्ची सिद्धि प्राप्त नहीं होसकती। साधनामय तपश्चर्या का साहस

उनमें होता नहीं, ऐसी दशा में वे धूर्तता, वंचना, पाखंड, षडयन्त्र, प्रचार, जादूगरी के आधार पर सिद्ध बनने का मायाचार करते हैं। प्रलोभन से आकर्षित होकर अन्य स्वार्थी लोग भी उनके षडयंत्र में शामिल होजाते हैं और वह गिरोह भोले भाले लोगों को लूटता खाता रहता है।

सत्य की शोध के लिए सुदूर स्थानों में जो दीर्घ कालीन पर्यटन हमने किया है उसमें जहां सत्पुरुष और सच्चे महात्माओं का अनुग्रह प्राप्त किया है वहां ऐसे धूर्त लोग भी कम नहीं मिले हैं। इन लोगों का वैभव काफी बढा चढा देखा है। हजारों लाखों रुपयों की गुप्त प्रकट सम्पत्तियां उनके पास देखी हैं। इन लोगों के रहस्यों का पता प्राप्त करना सहज काम नहीं है। भोले भाले लोग तो इनके चंगुल में ऐसे फँस जाते हैं कि जन्म भर उनसे छूट नहीं सकते। काफी सतर्कता और सूक्ष्म बुद्धि द्वारा, बहुत दिन तक बारीकी के साथ निरीक्षण करने पर ही कुछ पता चल पाता है। हमें इस प्रकार के जो भेद मालूम हुए हैं पाठकों के सामने उपस्थित कर रहे हैं।

अब तक इन भेदों को हमने बहुत ही गुप्त रखा था। कारण यह था कि एक बार एक व्यक्ति से हम इन भेदों की चर्चा कर रहे थे, तो वह बहुत प्रभावित हुआ। मजाक में नहीं वरन् बहुत ही गंभीरता से उसने कहा कि-यदि आप इस प्रकार की दस पाँच विद्याएं मुझे सिखादें तो मैं एक दो वर्ष में ही लाखों रुपया कमा सकता हूं। उस वक्त हम चुप होगये दूसरे दिन वह आदमी फिर हमसे बहुत गंभीरता पूर्वक मिला और अपनी पूरी योजना बना कर लाया। उसने कहा कि आप पाप पुण्य से डरते हैं तो आप अलग रहिए, मुझे वह सब बातें सिखाकर दीजिए, आमदनी का आधा भाग मैं आपको देता रहूँगा। किसी को पता भी न चल पावेगा और आप थोड़े ही दिनों में लक्षाधीश बन जावेंगे।

इस प्रस्ताव ने हमारे मस्तिष्क में एक नयी सावधानी पैदा की, वह यह कि-यदि इस प्रकार के भेदों को लोगों ने मालूम कर लिया तो धूर्त लोगों की पांचों घी में होंगी। वे उसी रास्ते को अपनालेंगे जिसे कि उन "सिद्ध" लोगों ने अपनाया था। इस विचार ने हमें बहुत सावधान कर दिया। और यह प्रतिज्ञा करली कि कभी किसी को यह बातें न बतावेंगे। उस प्रस्ताव के करने वाले को भी हमने स्पष्ट शब्दों में मना कर दिया। जिन्हें हमारी यात्राओं के वर्णन मालूम थे ऐसे निकटवर्ती मित्रों ने भी ऐसी चमत्कारी कलाऐं बताने का हमसे आग्रह किया पर उन्हें भी अबतक कुछ नहीं बताया गया. अब तक ऐसे अनेकों अनुरोध समय पर टाले जाते रहते हैं। किसी पर यह भेद प्रकट नहीं किये गये।

इन धूर्तताओं के विरुद्ध दूसरी ओर हमारे मन में तीव्र घृणा एवं बड़े विरोध की भावना काम करती रही है। जिन लोगों के यहां यह पाखंड प्रयुक्त होते हैं उनका समय समय पर काफी विरोध भी सब संभव उपायों से हमने किया है। यह इच्छा हमें बहुत दिनों से है कि जनता को इस दिशा में शिक्षित किया जावे ताकि वह ऐसे भ्रम और माया चारों से बच सके। इस संबंध में काफी समय तक गंभीर विचार करने और विज्ञ पुरुषों से सम्मति लेने पर अपने उस पूर्व निश्चय को बदलना पडा। गुप्त रखने से हमारे द्वारा नये जादूगर पैदा न होंगे यह ठीक है। पर जो लोग इस समय धूर्तता कर रहे हैं, या लोग अन्य मार्गों से उन बातों को सीख कर भविष्य में माया चार करेंगे उनकी रोक कैसे होगी? इस दृष्टि से विचार करने पर यह मत स्थिर किया गया कि इन रहस्यों को सार्वजनिक रूप से जनता पर प्रकट कर दिया जाय। ऐसा करने से अनेकों भोले भाले लोग सावधान होजायेंगे और तथा कथित सिद्धों को चगुल में फंसने से पूर्व यह देख लिया करेंगे कि वे किसी के द्वारा अनुचित रीति से ठगे तो नहीं जारहे हैं। दूसरी ओर धूर्त लोगों का रास्ता भी बन्द होगा वे सोचेंगे कि यह सब बातें जनता पर प्रकट होचुकी हैं, इसलिए हमारी पोल आसानी से खुल जायगी, यह भय उन्हें कुचाल छोड़ने के लिए मजबूर करेगा। इन बातों पर विचार करके यह इन पृष्ठों में वह सब

बातें प्रकट की जारही है जिन्हें अब तक हमने सावधानी के साथ छिपाये रखा था।

किन्तु किसी को इन पंक्तियों से भ्रम में न पड़ना चाहिए। योग साधना को कोई अलौकिक फल नहीं है, या जितने भी दिव्य शक्ति सम्पन्न महात्मा हैं वे सभी धूर्त हैं, ऐसा हमारा अभिमत कदापि नहीं है। अलौकिक दिव्य पुरुष भी इस भूतल पर हैं और होते हैं। उनकी महत्ता और महिमा को कोई कम नहीं कर सकता। सत्पुरुषों दिव्य आत्माओं तथा धूर्तों में एक अन्तर स्पष्ट हैं उसे ध्यान में रखने में सत् असत् का निर्णय आसानी से किया जा सकता है। सत् पुरुष सरल तम होते हैं, सबको वे अपने आत्मीयों के समान प्यार करते हैं. निष्कपट और निस्पृह भाव से बात करते हैं। उनके यहां छिपाव की कोई बात नहीं होती। इसके विपरीत धूर्तों को अपनी माया छिपाने के लिए पग पग पर दुराव एवं आडंबर करना पड़ता है। जहां दुराव एवं आडम्बर हो, पर्दा तथा भेद रखा जाता हो वहां सन्देह की काफी गुंजायश होती है वहां सावधानी रखने की आवश्यकता होती है। पैसे का अन प शनाप खर्च, अनावश्यक बातों की भरमार, राजसी ठाठवाठ, अमीरों जैसा आहार विहार, आलस्य प्रमाद की अधिकता, तत्वज्ञान की अपेक्षा मनोरंजन के समारोह, तुच्छ विषयों पर विशेष चर्चा, आत्म प्रशंसा, आदि बातें जहां अधिक दिखाई देती हों वहां समझना चाहिए कि यहां कुछ दाल में काला हो सकता है। वहां पैर फूंक २ कर रखना चाहिए। जहां सादगी, सीधापन, सरलता, निष्कपटता एवं खुला दरबार हो वहां सचाई की स्थिति अधिक होती है। फिर भी दोनों ही स्थितियों में विवेक पूर्वक नीर क्षीर को देखने की आवश्यकता है।

गत बीस वर्षों के अनुभव।

गत बीस वर्षों में भारत के लगभग सभी प्रदेशों में कई बार आध्यात्मिक खोजों के सिलसिले में हमने भ्रमण किया है। उस भ्रमण में अनेक भले बुरे अपने अपने ढंग के अनेकों विचित्र विचित्र व्यक्तियों से हमें संपर्क हुआ है। उनमें से इस अङ्क में केवल ऐसे व्यक्तियों की कटु स्मृतियां लिखी जारही है, जो योग के नाम पर चालाकी से अपना दंभ पुजवाते थे। अन्य प्रकार के अनुभवों को आगे फिर कभी प्रकट करेंगे। इस अङ्क के लेखों का प्रयोजन यह है कि पाठक सावधान रहें और बिना परीक्षा किये किसी नकली "सिद्ध" के चंगुल में न फंसें। अब हम पाठकों के सामने अपने कुछ अनुभव उपस्थित करते हैं।

सट्टा बताने वाले पीर।

बंगाल प्रान्त के मैमनसिंह जिले में एक मुसलमान साधु की गुफा है। उन्हें सोफा पीर कहते हैं। सड़क से कोई डेढ मील दूर पर यह गुफा है। इन पीर साहब के बारे में दूर दूर तक यह प्रसिद्ध है कि वे जिस पर प्रसन्न होजाते हैं उसे दड़े के ठीक नम्बर बतादेते हैं। कलकत्ता के आसपास दड़ा लगाने का बड़ा चलन है। मंगल और शुक्र का दड़ेबाजों के यहां नम्बर खुलता है और जिसका दांव आजाता है उसे एक के बदले सौ रुपये मिलते हैं। दड़ा लगाने का प्रचार बड़े शहरों से लेकर छोटे ग्रामों तक में है। दड़े के नम्बर पूछने के लिए इन पीर साहब के पास सैकड़ों आदमियों का मेला लगा रहता है। जो भी जाता है भेंट पूजा लेकर जाता है। मेवे मिठाई और फलों का ढेर लगा रहता है। पीर साहब ने सैकड़ों आदमियों को अब तक दड़ा बताया है वे जिस पर प्रसन्न हो जाते हैं उसे निहाल कर देते हैं' ऐसी विश्वास पीर साहब के प्रायः सभी मुरीद मन में धारण किये रहते हैं।

बडी कठिनता से उस मुश्किल रास्ते को पार करके हम वहाँ पहुँचे। दूर देश से आये हुए, एक प्रतिभा शाली, विद्वान्, ब्राह्मण कुमार का समाचार उनके शिष्यों ने पीर साहब को सुनाया, उन्होंने हमारे ठहरने और भोजन विश्राम की समुचित व्यवस्था करदी। दूसरे दिन प्रातःकाल उन्होंने भेंट के लिए बुलाया। वार्तालाप करके वे मुग्ध होगये। एकान्त वार्ता के लिए वे बहुत ही थोडा समय लोगों को

देते हैं पर मुरीदों की प्रतीक्षा की परवा न करके दो ढाई घंटे लगातार वे हमसे बातें करते रहे। पहली ही मुलाकात में पीर साहब बहुत प्रभावित होगये वे सोचने लगे कि यह व्यक्ति मेरा शिष्य बन जावे तो मेरी पूजा प्रतिष्ठा और मान्यता में अनेक गुनी वृद्धि होसकती है। अपने इन विचारों को वे मनमें रोक न सके दूसरे दिन उनके दबे शब्दों में अपने मन की बात प्रकट करदी और साथ ही शिष्य होने का भारी आर्थिक प्रलोभन भी दिया।

अपना उद्देश्य दूसरा था। सत्य की शोध, एवं तथ्य की जानकारी, आत्मा का कल्याण यही अपनी आकांक्षा थी। धन, यश, या ऐश्वर्य की इच्छा से पीर साहब के पास जाने का प्रयोजन न था अभीष्ट प्राप्ति के लिए पीर साहब के पास ठहरना था। सत्य का पता लगाना था। उत्तर में उनसे इतना ही निवेदन किया कि अभी मुझे आये हुए तीन ही दिन हुए हैं। कुछ समय अपने पास रहने का और विचार करने का मुझे अवसर दें तो ही कुछ निश्चित उत्तर दे सकूँगा। पीर साहब सहमत होगये।

अब नित्य उनके पास बैठना अपना कार्यक्रम था। सारे दिन होती रहने वाली चर्चा को एकाग्रमन से किन्तु उपेक्षित मुख मुद्रा के साथ सुनता था। कभी कभी पीर साहब को प्रसन्न करने वाली फुलझड़ियां बीच बीच में छोड देता था जिससे उनकी कृपा अपने ऊपर ज्यों की त्यों बनी रहे। करामात का रहस्य अपने को जानना था, समस्त चित्त वृत्तियां उसी की खोज में लगी रहतीं।

तीन सप्ताह के निरंतर सूक्ष्म पर्यवेक्षण से वास्तविकता का पता चल गया, पीर साहब के पास कोई सिद्धि न थी। वे दड़े के नम्बर पूछने के लिए आये हुए मुरीदों को मुट्ठी भर कर कोई चीज देते थे जैसे फूल, बताशे, मेवे आदि। मुरीद उन्हें चुपचाप गिनते और वही संख्या मान लेते। कभी कुछ गिनती सूचक वाक्य भी कहते रहते जैसे सारंगपुर यहां से तेतीस मील है। एक दिन यहां से सत्रह हिरनों का झुण्ड निकला था, यह शाल पचपन रुपये की होगी" आदि। बैठे हुए व्यक्ति मन उन अंकों से दड़े के नम्बरों का अर्थ निकालते थे और दाव लगाते थे।

पीर साहब इस बात का ध्यान रखते थे कि लोगों को भिन्न भिन्न नम्बरों का संकेत किया जावे। दड़े में एक से लेकर सौ तक नम्बर आते हैं। मान लीजिए पांच सौ दर्शक आये। उनको अलग अलग नम्बर बताये। पांच सौ व्यक्तियों को सौ नम्बर अलग २ बताये जावें तो पांच आदमियों का एक नम्बर होगा जो भी नम्बर खुलेगा वह प्रतिदिन पांच व्यक्तियों को जरूर बताया गया होगा। इस प्रकार सात दिन में कमसे कम ३५ आदमियों का नम्बर जरूर ठीक निकलेगा। वे पेंतीस आदमी भविष्य में अधिक लाभ की आशा से पीर साहब की भरपेट प्रसंसा करते और उन्हें भेंट पूजते चढाते। उन पेंतीस आदमियों की सफलता का ढोल चारों ओर पिटजाता। शिष्य लोग तिलका ताड बनाते पेंतीस की जगह पर तीन सौ गिना देना उनके बाऐं हाथ का काम है। लोगों को मिला पाँच सौ बताये दस हजार। इस प्रकार उस अज्ञ समुदाय में तिल का ताड बनाने वाली गप्पें फैलादी जाती। और पीर साहब की मानता दिन दूनी रात चौगुनी बढती जाती। दूर दूर से बम्बई कलकत्ता, कराची, मद्रास तक के सटोरिये, दड़े बाज, तेजी मंदी, दडा सट्टा, फीचर लाटरी आदि के पहुँचते। उनके पट्ट शिष्य ऐसे लोगों के कान भरने, पट्टी पढाने, प्रभावित करने और अच्छी भेट पूजा पाने में बड़े चतुर थे। दिन भर चांदी कटती रहती। शिष्य लोगों के पौबारह रहते।

जिन अधिकांश लोगों के पैसे व्यर्थ ही डूब जाते कुछ न मिलता वे बेचारे पेट मरोड कर चुप होजाते। भाग्य का फेर, बुरे दिन, पीर साहब की सेवा पूजा में कमी, आदि अनेकों कारण असफलता के सोच लेते। और फिर उसी आशा तृष्णा में भटकते रहते। "शायद अब की बार हमें मिले" इसी आशा में सैकड़ों लोग वर्षों से उलझे हुए थे। काफी नुकसान उठा चुके थे। पर अपने दुर्भाग्य की बात किसी से कहने का उनमें साहस न होता

था। दड़े के व्यापारी पीर साहब की कृपा से मालोमाल होरहे थे नये नये अड्डे खुलते जाते थे। पीर साहब की महिमा बढाने और प्रशंसा करने के लिए इन लोगों ने वेतन भोगी ऐजेन्ट रख छोड़े थे जो दूर दूर तक पीर जी की प्रशंसा करके नये 'दाव लगाने वाले' तैयार करते थे। इस वृद्धि से दड़े के व्यापारी मालोमाल होरहे थे।

यह सब दृश्य देखकर अपनी आत्मा तिलमिलाने लगी, जनता का मूल्यवान समय, हजारों रुपया प्रतिदिन नष्ट होता था, जुआ खोरी की शैतानी आदत बढती थी, मिथ्या भ्रम और पाखंड फैलता है। अपना उद्देश्य सत्य की शोध था, यहां शैतान का साम्राज्य छाया हुआ था। एक दिन अस्वस्थता का बहाना करके बिस्तर बगल में दबा कर वहां से चल दिया। पीर जी को एक अच्छा शिष्य हाथ से निकलने का दुख हुआ। उन्होंने फेर आने का आग्रह करते हुए विदा दी। मैं दड़ा बताने की करामात को नमस्कार करके आगे के लिए चल दिया।

सोना बनाने वाले सिद्ध।

चम्पारज जिले में एक ऐसे महात्मा का नाम सुना था जो सोना बनाने की विद्या जानते हैं। उनके बारे में यह कहा जाता था कि वे किसी से मांगते कुछ नहीं जब शिष्य मंडली के तथा अपने खर्च के लिए रुपयों की जरूरत पडती है तो थोडा सा सोना बना लेते हैं और इस सोने को बाजार में भेज कर बिकवा देते हैं। उसी रुपये से उनका सब काम चलता है। ढूँढते २ हम इन सिद्धजी महाराज के पास पहुँचे। देखने में वे तेजस्वी थे। भरा हुआ चहरा, चमकीली आंखें। उठा हुआ शरीर, घनी दाढी और जटाओं के बीच बडा सुहावना मालूम पडता था उनकी जमात में कोई आठ दस उनके निजी शिष्य थे, दस बाहर बारह के सेवक उनके साथ थे, मैं भी इसी जमात में शामिल होगया। अपनी विद्या, वाक पटुता एवं व्यवहार कुशलता से वे लोग थोडी ही देर में प्रभावित होगये और खुशी खुशी अपने साथ रख लिया।

इन सभी लोगों का रहन सहन काफी खर्चीला था। भोजन में मेवे मिठाई, दूध रबडी, भांग, ठंडाई की धार रहती थी। दोनों वक्त भंग छनती थी जिसमें २०) प्रतिदिन से कम का खर्च न होता होगा। जमात के हर आदमी के ऊपर दो तीन रुपया रोज से कम का खाने का खर्च न था। गांजा और चरस की चिलमें बराबर चलती रहतीं। इस जमात में कभी कोई सामूहिक सत्संग या वार्तालाप होते हमने न देखा वरन् बराबर कानाफूसी होती रहती। कोई किसी को अलग बुला कर कान पर मुँह रख कर घुसपुसाता कोई किसी के कान में बात करता। दिन भर गुप्त मत्रणाए होती रहतीं।

एक दो दिन रहने के बाद ही सभी लोगों से अपनी आत्मीयता बढने लगी और उन गुप्त मंत्रणाओं एवं काना फूसियों के लिए हमें भी पात्र मान लिया गया। पहले दिन हमने समझा था कि सोना बनाने के रहस्यों के वैज्ञानिक भेदों पर यह लोग विवेचना करते होंगे, इसलिए इनकी वार्ता में प्रवेश पाने के लिए हमें अत्यधिक चतुरता पूर्ण प्रयत्न करने पड़ेंगे। पर दूसरे दिन यह भ्रम दूर होगया। इस गुप्त बात-चीत का विषय केवल महात्मा की प्रशंसा तथा उनके सोना बनाने की योग्यता की पुष्टि करना था। यह वार्ताएं प्रमुख शिष्यों द्वारा प्रचलित की जाती थीं। वे ऐसी घटनाएं, कथा रूप में गढते थे जिनमें यह बताया जाता था कि इन सिद्धजी ने अमुक बार इस प्रकार इस प्रकार इतना सोना बनाकर अमुक शिष्य को दिया था। अमुक दिन इतना सोना बनाया था। उस दिन बनाने में जो चीजें डाली थीं उसमें से अमुक को तो हम जानते हैं अमुक रङ्ग की दवा का नाम मालूम नहीं। इन महात्मा के गुरुजी और भी अधिक पहुँचे हुए थे वे चिलम के छेद में तांबे के पैसे की रोक रखते थे और ऊपर से एक बूटी गांजे की तरह रख कर चिलम पीते थे, बस इतने में ही तांबे का पैसा सोने का होजाता था। उस सोने के पैसे को गुरुजी उसी भगत को दे जाते थे जिसके यहां आतिथ्य स्वीकार करते थे। यह

बर्तमान गुरुजी उतने पहुंचे हुए नहीं हैं, इनको सोना बनाने में बहुत सामान इकट्ठा करना पडता है तब कहीं कार्य पूरा होता है। ऐसी ही अनेक बातें उस काना फूंसी का विषय होती थीं।

सिद्धजी के एक शिष्य ने कानाफूंसी करते हुए मुझसे कई बातें कहीं। उसने बताया कि (१) कलकत्ता के अमुक सेठ को महात्माजी ने यह विद्या सिखादी है वह अरबों खरबों रुपये का लाभ कर चुका है। (२) एक बार बम्बई का अमुक सेठ देवालिया होने जारहा था वह दौड़ा हुआ आया और महात्मा जी के चरणों पर गिर कर लाज बचाने की बात कही। महात्माजी ने दया करके उस सेठ को बीस लाख रुपये का सोना बना कर दिया और शर्त करली कि इस समय तो अपना काम चलाले पर बाद में इस रुपये को धर्म कार्य में लगावें। प्रतिज्ञा के अनुसार वह सेठ अब तक बराबर इतने रुपये साल का सदावर्त साधु महात्माओं को बांटता है। (३) मद्रास प्रान्त में एक बड़ाभारी मन्दिर बन रहा है जिसका खर्च इन महात्माजी ने ही दिया है। (४) यह महात्मा जी अब तक कई आदमियों को यह विद्या सिखा चुके हैं पर साथ ही यह कह देते हैं कि यदि उसने किसी को बताई तो उसी क्षण उसकी मृत्यु हो जायगी। एक आदमी की प्रतिज्ञा तोडने पर तुरन्त मृत्यु हो भी चुकी है (५) महात्माजी से इस विद्या को वही लेसकता है जो उनको पूरी तरह से प्रसन्न करले। प्रसन्न करने के लिए तन मन धन से सेवा करनी चाहिए। जब वे पूरी भक्तिदेख लेते हैं तभी प्रसन्न होते हैं।

यह बातें इस ढंग से कही गई थीं मानों वह व्यक्ति हमारा बडा हितैषी हो और हमारे लाभ के लिए हमारी अभीष्ट पूर्ति में सहायक बनने के लिए कह रहा हो। इन्हीं बातों को वे शिष्य लोग बाहरी आगत व्यक्तियों में गुपचुप रूप से फैलाते थे। वे आगत व्यक्ति अन्य आगत व्यक्तियों से कहते थे। इस प्रकार अनेकों मुखों से गुप्त रूप से एक ही बात की पुष्टि होते देखकर नये व्यक्ति का मनमें पूरा और पक्का विश्वास बैठ जाता था कि यहां सोना अवश्य ही बनाया जाता है। और प्रयत्न करने पर मुझे भी वह विद्या प्राप्त होसकती है। यह विश्वास मनमें बैठ जाने पर वह व्यक्ति बडी से बडी कुर्बानी करने को तैयार होजाता था। बिना परिश्रम लाखों करोड़ों रुपये पाने का लोभ साधारण लोभ नहीं है इतने बड़े लाभ के लिए मनुष्य सहज ही अपना बहुत सा समय और धन खर्च करने को तैयार होजाता है। लोभ से आतुर हुए मनुष्य की विवेक बुद्धि कुंठित होजाती है, वह तर्क वितर्क करके वास्तविकता का परीक्षण करने में असमर्थ होजाती है। इन काना फूंसी के प्रचार और षड्यंत्र की वास्तविकता को न समझने वाले अनेकों आंख के अंधे और गांठ के पूरे मनुष्य वहां पहुँचते थे और अपना पैसा महात्माजी को प्रसन्न करने के लिए होली की तरह फूंकते थे। भक्त मण्डली में होड लगी रहती थी कि देखें कौन अधिक खर्च करे। इस होडाहोडी में एक से एक बढिया राजसी आहार विहार के ठाठबाठ वहां जमा होते थे।

विश्वास और अविश्वास की भावनाऐं मेरे मनमें द्वन्द मचा रही थीं। यदि सोना बनाना इन्हें आता है तो यह विद्या मुझे भी प्राप्त करनी चाहिए। यह लोभ अपने लिए भी कम न था, घर से ब्रह्म परायण होने निकले थे. पर इस तथा कथित "सोने की खान" में वह इच्छा धुंधली पड गई। यदि यह विद्या मिल गई तो धन की प्रचुरता होने पर कैसे बड़े बड़े काम करेंगे, ऐसी कल्पनाऐं इतने विशाल आकार में उत्पन्न होने लगीं जिनके पैर जमीन पर थे तो शिर आकाश में। इस सोने की खान में सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से अपनी समस्त चतुराई और जागरूकता को एकत्रित करके कार्य करने लगा।

उस अवसर की बडी प्रतीक्षा थी जब महात्मा जी सोना बनावें और अपनी आंखों उसे बनता देखकर कम से कम यह विश्वास कर सकूँ कि इनके पास यह विद्या वास्तव में है या नहीं। ऐसे अवसर दो चार महीने में कहीं एक बार आते थे। मुझे तीन महीने वहीं ठहरना पडा, तब कहीं एक अवसर

ऐसा आया। पारा, हड़ताल, तांबा, गंधक तथा अन्य कुछ जड़ी बूटियां जमा की गईं, एक गुप्त स्थान पर भट्टी तैयार की गई। वह चीजें कढाई में डालकर आग जलादी गई। मसाले पकते रहे, कुछ देर बाद हम सबको हटा दिया गया और महात्माजी तथा उनके प्रधान शिष्य कढाई में कुछ उलट पलट करते रहे, कुछ चीजें उसमें डालते तथा निकालते रहे ऐसा हमने दूर स्थान से देखा। इस को सबके सामने कढाई उतारी गई। करीब तीन तोले सोना निकला। दूसरे दिन उसे बेचने बाजार भेज दिया गया। जो बेचने गया था उसने करीब १००) सोने का मूल्य महात्माजी के सामने रख दिया।

इस क्रिया को देखकर अन्य श्रद्धालु भक्तों के मन में महात्माजी के लिए अनेक गुनी श्रद्धा उमड़ पड़ी। उस श्रद्धा के जोश में जो छिद्र और सन्देह थे वे उनकी दृष्टि तक पहुँचते ही न थे। पर अपने मन में न तो अन्धश्रद्धा थी और सन्देहों के प्रति उपेक्षा भाव। दृष्टि दौडाने पर सन्देह हुआ कि जब हम लोगों को हटाया गया था तब तांबा निकाल कर सोना डाल दिया गया होगा। पर निश्चय न हुआ कि वास्तविकता क्या है। निर्णय पर पहुँचने के लिए उनके प्रधान शिष्य से घनिष्ठता स्थापित की गई। वह लडका कोई इक्कीस बाईस वर्ष का था दस वर्ष से महात्माजी की सेवा में था, उनकी सभी गुप्त प्रकट बातों से भली भांति परिचित था। मैंने पकड़ने की कोशिश की कि इसे किस प्रकार अपनी ओर आकर्षित किया जासकता है। लडका तरुणाई में प्रवेश होरहा था, उसके चहरे और हाव भावों से प्रकट होता था कि काम वासनाऐं उसे बुरी तरह बेचैन किये हुए हैं। उसकी इस कमजोरी को पकडकर मैंने एक दिन एकान्त में लेजाकर चुपके से उससे कहा कि आप चाहें तो मैं एक अत्यन्त सुरूप तरुणी से विवाह करा सकता हूं। पहले तो वह झिझका, पर पीछे अपनी नेक नीयती, उसके प्रति अपने प्रेम एवं विश्वास प्रकट करने पर वह तैयार हो गया। पहली बार कहने पर उसे भय था कि इस मन की बात प्रकट होजाने पर महात्माजी की कृपा और यहाँ के ऐश आराम से हाथ धोना पड़ेगा। पर पीछे जब उसके मनमें कुहराम मचाने वाली कामेच्छा को तृप्त करने का लोभ सामने आया तो उसके आगे वह शिष्यता का वैभव तुच्छ जँचने लगा। विवाह का प्रलोभन देने वाला मैं, उसे देवता सा जँचने लगा। वह मुझे प्रसन्न करके मेरी सहायता से सुन्दरी बधू प्राप्त करने के लिए छाया की तरह पीछे पीछे फिरने लगा।

तीर निशाने पर लगा। उस प्रमुख शिष्य से आत्मीयता गांठ लेने पर हम दोनों में अपनी अपनी अन्तरंग बातों को कहने सुनने का क्रम चलने लगा एक दिन मैंने उससे महात्माजी के सोना बनाने का रहस्य पूछा। पुरानी आदत के अनुसार पहले तो वह कुछ झिझका पर पीछे हमारे प्रोत्साहन देने पर उसने सारा भेद प्रकट कर दिया। उसने बताया कि महात्माजी सोना बनाना बिलकुल नहीं जानते, बाजार से सोना मँगाकर उसे ही कढाई में डाल देते हैं और तांबे को सफाई के साथ निकाल लेते हैं। हम लोग ऐश आराम पाने के लिए नव-आगन्तुकों की प्रशंसा करके, एवं कल्पित घटनाऐं बता कर प्रभावित किया करते हैं। नये आदमी वर्ष दो वर्ष सेवा टहल करते और धन लुटाते हैं। परन्तु उन्हें बताया कुछ नहीं जाता मंत्र सिद्धि, बूटी की तलाश, आदि बहाने करके उन्हें लटकाये रखा जाता है, गुप्त बातें, अधिक लाभ की बातें, कानों कान खूब फैलती हैं, इसलिए जहां पुराने भक्त टूटते हैं वहां नये भक्त आते हैं। इस प्रकार यह ढर्रा चलता रहता है, महात्माजी को प्रतिष्ठा, पूजा, यश और ऐश्वर्य मिलता है उनके सहारे हम लोग चैन की छानते और मस्त रहते हैं, यही सोना बनाने का रहस्य है।

यह अत्यन्त विश्वस्त गवाही थी इसके बाद और कुछ सबूत लेने की आवश्यकता न थी। उस प्रधान शिष्य को साथ लेकर सोना बनाने वाले महात्मा को नमस्कार करके मैं चल दिया। चलते समय उपस्थित लोगों से भंडाफोड़ भी किया पर अन्ध श्रद्धा के तूफान में हमारा विरोध तिनके की

तरह बह गया। किसी ने मेरी बात पर विश्वास न किया। उलटा नास्तिक करार दिया गया। उस प्रधान शिष्य का अपने वचनानुसार विवाह कराके और एक कमाऊ धंधे में लगा कर आगे चल दिया।

त्रिकालदर्शी शाक्त।

भरतपुर रियासत के एक गांव में देवी के मठ पर एक तांत्रिक महोदय रहते थे, जिनके बारे में दूर दूर तक यह प्रसिद्ध है कि उन्होंने देवी को सिद्ध कर लिया है। भगवती दुर्गा उन पर प्रसन्न हैं और उन्होंने त्रिकाल दर्शी होने का बरदान दिया है। जो भी आदमी उनके पास जाता है उसके मन की बात जान लेते हैं और जो बात पूछने की इच्छा से कोई मनुष्य उनके पास जाता है उसे बिना कुछ पूछे ही सब बातें बता देते हैं। इन शाक्त सिद्ध की कीर्ति दूर दूर तक फैल रही थी। उनके पास दसियों आदमी रोज जाते थे और अपने बारे में बिना बताये अनेक गुप्त बातें सुनकर पूर्ण प्रभावित होकर उनके सच्चे भक्त होकर लौटते थे।

अपनी भी इच्छा उनके दर्शनों की हुई। आवश्यक सामान साथ लेकर चल दिया। रेलवे स्टेशन से कोई चार मील दूर वह देवी का मठ है। रास्ता बडा ऊबड़ खाबड, जंगली और पथरीला है। इस रास्ते में सिंह तो नहीं पर भेडिये और बाघ प्रायः मिलते हैं। इसलिए अकेला आदमी प्रायः ठिठकता है और यह देखता है कि कोई साथी उधर जाने वाला मिले तो चलें। कारण कि लुटेरों का, हिंसक पशुओं का, तथा छोटी पगडंडियों के बीच रास्ता भूल जाने का भय बना रहता है। स्टेशन के बाहर साथी की प्रतीक्षा में बैठा हुआ, इधर उधर देख रहा था कि एक सज्जन कंधे पर मोटी लाठी रखे, बगल में एक गठरी दबाये पास में आखड़े हुए। मुझे बैठा देखकर ठिठक गये। और गठरी में से चिलम निकाल कर तयार पीने की व्यवस्था करने लगे। चिलम सिलगा कर मेरी ओर बढाते हुए उन्होंने मुझे भी पीने के लिए पूछा, मैंने विनय पूर्वक क्षमा मांगते हुए कहा कि मैं तमाखू नहीं पीता, मेरे मना करने पर वह मेरे समीप बैठ कर खुद धूम पान करने लगा।

अब बात चीत का सिलसिला शुरू हुआ। एक दूसरे ने एक दूसरे का परिचय पूछा। मालूम हुआ कि वह व्यक्ति धौलपुर रियासत का रहने वाला राजपूत है प्राइमरी स्कूल तक पढा है, घर में कुछ जेवर चोरी चले गये हैं उनका पता पूछने शाक्त महोदय के पास जारहे हैं। यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई। साथ मिल गया। वह पहले भी देवी के मठ पर कई बार जा चुका है, रास्ता उसका भली भांति देखा हुआ है यह जानकर और भी अधिक तसल्ली हुई। हम दोनों साथ२ चल दिये।

वह आदमी था तो देहाती पर बातचीत में बडा निपुण था। मीठी जबान, हमदर्दी से भरी हुई बोलचाल बरबस दूसरों का मन अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। हम दोनों साथ साथ चले जारहे थे, वह आप बीती अनेकों बातें सुनाता जारहा था, उसकी चोरी कैसे हुई, किस पर उसका शुबा है, आदि बातें उसने कहीं उसकी बातें करीब एक डेढ घंटे चलती रहीं इतनी देर में हम प्रायः दो ढाई कोस चल चुके थे। दोपहर हो चला था गर्मी के दिन थे, छायादार पीपल के पेड के नीचे कुआ था, उसने गठरी में से लोटा और डोरी निकाल कर पानी खींचा, हम दोनों पानी पीकर पेड की शीतल छाया में सुस्ताने के लिए थोडी देर बैठ गये।

अब हमारे साथी ने बात चीत का क्रम बदला, उसने अपनी कहने की बजाय हमारी बातें पूछनी आरंभ कीं। वह मुस्कराहट, आत्मीयता और उत्सकता के साथ ऐसी मुद्रा के साथ मेरा परिचय एवं आने का कारण पूछने लगा। न बताना शिष्टाचार के नाते ठीक न था। सही बातें बताना मैं चाहता न था क्योंकि मेरा परिचय और आने का कारण दोनों ही बड़े विचित्र थे। इसे समझने में उसे काफी कठिनाई पडती और मुझे बहुत माथा पच्ची करनी पडती। पीछा छुडाने के लिए मैंने यों ही अंट संट बातें बताईं। कहा मैं अलीगढ का रहने वाला गौड ब्राह्मण हूं नाम मेरा रामचन्द्र है। एक मुकदमा लगगया है उसकी बात पूछने

आया हूं। मुकदमे की वारीकियों के बारे में उसने अनेक प्रश्न पूछे—किस विषय का मुकदमा है, किस अदालत में है मुद्दाअलह कौन है. आपका वकील कौन है, गवाह कौन कौन होचुके हैं, आदि इसी प्रकार मेरे व्यक्तिगत, पारिवारिक, व्यवसायिक जानकारी के संबंध में अनेकों बातें पूछीं। मैं मन ही मन इस अकारण की जिरह से खीज रहा था पर शिष्टाचार के कारण उसे उलटे सीधे उत्तर देता चलता था। उस प्रकार चलते चलते हम लोग दोपहर ढले तक मठ पर जापहुँचे।

मठ की बगल में एक बड़ा सा पक्का दालान बन रहा था, सामने चबूतरा था, चबूतरे पर पीपल का छायादार पेड़, पेड़ से थोड़ा हट कर कुआ था। जंगल में यह स्थान बहुत भला मालूम पड़ता था। उस दालान में हम लोग ठहर गये। पूछने पर पता चला कि शाक्त महोदय दिन रात मठ में साधना रत रहते हैं और प्रातःकाल निकलते हैं उसी समय आगन्तुकों से भेट करते हैं। रात हमें उस दालान में रह कर काटनी थी। उसमें हमारे जैसे और भी आठ दस आदमी ठहरे हुए थे। पूछने पर मालूम हुआ कि वे सभी अलग अलग स्थानों के हैं और अपनी किसी कठिनाई में इन सिद्ध पुरुष की सहा-सहायता लेने आये हैं। इतना जान लेने के बाद मैं पीपल की छाया में चबूतरे पर दरी बिछा कर लेट गया।

जो व्यक्ति उस दालान में ठहरे हुए थे उनमें आपसी बातें होरही थीं, सब लोग आपस में अपनी अपनी दुःख गाथाऐं कह रहे थे। मैं सोना चाहता था पर इन ठहरे हुए लोगों की कौतूहल पूर्ण गाथाओं को सुनने में ऐसा मन लगा कि नींद न आसकी। इस सुनने में रस आता था पर एक बात बहुत बुरी लगती थी कि उनमें से दो तीन आदमी बाकी लोगों की बातें पूछने के लिए बेतरह पीछे पड़े हुए थे। पूछने योग्य और न पूछने योग्य सभी बातें पूछ रहे थे। अपरिचित या नवीन परिचय के व्यक्ति से जो पूछताछ की जाती है उसकी एक मर्यादा होती है, अत्यन्त निजी बातों को, कुछ घंटे के परिचय मात्र के आधार पर, पूछना सभ्य समाज में अशिष्टता समझी जाती है पर यह लोग उस अशिष्टता की परवा न करके ऐसे चिपटे हुए थे मानों उनके पेट में से हर एक बात पूछने पर तुले हुए हों।

संध्या होते होते मैं उठा, शौच स्नान से निवृत्त हुआ। थैले में से भोजन निकाला और कुए के मुंडेर पर बैठकर खाया। और वहीं चबूतरे पर जा बैठा, रात काटनी थी, शाक्त महोदय से तो रात को मिलने की संभावना थी ही नहीं। जो मुझे बहुत अखरते थे, उन पूछने वालों में से एक ने मुझे भी आघेरा और निजी बातों की पूछताछ करने लगा। मन ही मन मुझे झुंझलाहट आई कि यह लोग ऐसी अनधिकार चेष्टा क्यों करते हैं। एक बार मनमें आया कि इन्हें फटकार दूँ। पर दूसरे ही क्षण दूसरा विचार पैदा हुआ—यहां जंगल का मामला है, रात इनके साथ बितानी है, झगड़ा करने से कोई विपत्ति आसकती है, अपना कोई सहायक नहीं। इस लिए इन्हें नाराज करना ठीक नहीं। इसलिए मैं उनके प्रश्नों के गलत सालत उत्तर देकर पीछा छुड़ाने का प्रयत्न करता रहा। अधिक देर होजाने पर नींद आने का बहाना करके मैं लेट गया। कुछ देर आंख बन्द किये पड़े रहने पर नींद आई और जब आंख खुली तो सवेरा था।

साथी लोग मुझसे बहुत पहले उठकर नित्य कर्म से निवृत्त होचुके थे। मैं भी जल्दी जल्दी सब काम से निवृत्त हुआ। सूर्योदय होते ही शाक्त महोदय देवी के मठ में से निकले। स्थूल शरीर, माठे पर त्रिपुण्ड, लाल रेशमी धोती, बढ़े हुए बाल, चढ़ी आंखें में सेंदुर, तिरछी भौं, देखने में डरावनी सूरत लगती थी। एक कटोरा सा बिछौना बिछा दिया गया सब लोग बैठ गये, उन सिद्ध पुरुष के लिए चौकी बिछादी गई, वे उस पर विराजमान होगये। कुछ देर तक सब लोग चुपचाप बैठे रहे। सन्नाटे को चीरते हुए उन शाक्त महोदय ने हम लोगों में से एक का नाम लेकर पुकारा। वह हाथ बांध कर खड़ा होगया। अब उस खड़े हुए व्यक्ति का सारा

इतिहास वे शाक्त महोदय बताने लगे। ऊपर पीपल के पेड़ की ओर उनकी दृष्टि थी, भाव भंगी ऐसी बनाते जाते थे मानो पेड़ के ऊपर कोई देवता बैठा हो और वह उनसे कुछ कह रहा हो। और मानो जो बात देवता से सुनते हो वही बातें वे कह रहे हों। कभी कभी अपनी भूल का बहाना करके देवता से फिर उस बात को पूछते और अपनी गलती को दुरुस्त करते। इस प्रकार जो व्यक्ति पुकारा गया था उसका नाम, गांव, घर की बनावट, पारिवारिक परिचय, अन्य गुप्त प्रकट बातें, घर से यहां तक आने का वृत्तान्त, यहां आने का प्रयोजन आदि अनेकों बातें सविस्तार उन्होंने बताई और जिस काम के लिए आया था, उसके संबंध में भविष्य वाणी की। जो बातें बताई गई थीं, वे शत प्रतिशत ठीक थीं, बेचारा वह व्यक्ति श्रद्धा से गद् गद् होगया। ऐसा त्रिकालदर्शी सिद्ध उसकी दृष्टि में ईश्वर की बराबर था। जो कुछ भेंट पूजा लाया था उससे अधिक उसने सिद्ध महोदय के सामने रख दिया। अब दूसरों का नम्बर आया। जिसका नाम पुकारा जाता वह खड़ा होता। पीपल पर बैठे हुए अदृश्य देवता से वे बातें करते जाते और खड़े हुए व्यक्ति का नाम, धाम, पता, परिचय, अनेक गुप्त प्रकट बातें, आने का उद्देश्य बताते थे तथा आगन्तुक की मनोवांछा के संबंध में भविष्य वाणी करते या कठिनाई का उपाय बताते। वह व्यक्ति श्रद्धा से नत होकर भेंट चढ़ाता और उठकर चला जाता। सभी लोगों के संबंध में शत प्रतिशत बातें सच बताई जारही थीं। जिससे श्रद्धा और विश्वास के अटूट भाव सबके मनमें जमते थे।...मैं अनेक बार ठगा गया था, अनेकों की धूर्तता में बैठ चुका था, पर बिना प्रश्न कर्ता के एक शब्द सुने सब बोले इस प्रकार सारी बातें बतादेने वाला अपने ढङ्ग का अनौखा शाक्त था। उसकी सिद्धि के संबंध में मेरे मनमें भी श्रद्धा जागने लगी।

मैं पीछे बैठा था, मेरा नम्बर अन्त में आना था। जब अकेला मैं रह गया तो पुकारा गया—"गोपाल!" मैंने इधर उधर दृष्टि दौड़ाई पर दूसरा कोई व्यक्ति वहां न था, मैं अकेला ही था। शाक्त ने आंखें तरेर कर कहा—क्या सोरहे हो, मैं तीन आवाज दे चुका हूं, सामने नहीं आते। मैं हड़बड़ा कर उठा और अन्य लोगों की भांति हाथ बांध कर खड़ा होगया। देवता से पूछना और मुझे मेरे संबंध की बातें बताने का क्रम चलने लगा। पर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब देखा कि मेरे संबंध में एक भी बात ठीक नहीं बताई जारही है। बिलकुल सब गलत है। हैरानी से मेरे माथे पर पसीने की बूंदें आगई। जब सब लोगों की सब बातें ठीक बताई जाचुकी हैं तो मेरे सम्बन्ध में यह बिलकुल उलटा क्यों होरहा है। इस हैरानी को चीर कर एक बात याद आई। रेलवे स्टेशन से साथ आने वाले आदमी को तथा रात पर चबूतरे पर पूछताछ करने वाले सज्जन को जो बातें मैंने बिलकुल गलत बताई थीं वे ही बातें सिद्ध महोदय ज्यों की त्यों दुहरा रहे हैं। मैंने अपना गलत नाम "गोपाल" स्टेशन से साथ आने वाले साथी को बताया था। अब मैं समझ गया कि शाक्त महोदय के त्रिकाल दर्शी होने का क्या रहस्य है। उनके गुर्गे आगन्तुकों के पीछे लग जाते हैं और उससे भेद पूछ कर शाक्त को चुपचाप बतादेते हैं और दूसरे दिन वह उन्हीं बातों को ग्रामोफोन के रिकार्ड की तरह दुहरा देता है।

मेरे संबंध में सभी बातें बिलकुल गलत बताई जारही थीं, इनके कारण जो हैरानी थी उसका समाधान होजाने पर मेरे होटों पर मुस्कराहट की एक हल्की लहर दौड़ गई। मुझे सन्न देखकर शाक्त भी अकचका रहा था अब प्रसन्न मुद्रा देखकर उसे संतोष हुआ। अन्त में उसने पूछा काठ की तरह क्यों खड़े हो, मैंने जो बताया है वह ठीक है या नहीं। मैं बिना कुछ उत्तर दिये बैठ गया। उसने फिर पूछा—बोलते क्यों नहीं। मैंने नया बहाना बनाया। हाथ पैरों को कपाते हुए कहा—महाराज मुझे "गुंग बाय" का रोग है कभी कभी मेरा मस्तिष्क बिलकुल बेकाम होजाता है, जब बीमारी का दौरा होता है तो कानों में सनन सनन होने लगती

है। मुझे आज बीमारी का दौरा होगया। आपने जब नाम पुकारा तो उसे भी न सुन सका और जो कुछ आपने कहा है वह भी कुछ समझ न पड़ा। अब कृपा कर एक दिन ठहरने का अवसर और दीजिए। बहुत दूर से आया हूं। कल आपकी कृपा से लाभ अवश्य उठाऊंगा। आपने इतनी देर के परिश्रम को बिना लाभ का जाते देखकर शाक्त प्रसन्न हुआ, मुझे नाराजी और तिरस्कार की दृष्टि से देखा पर मेरी विनय को ध्यान में रख कर दूसरे दिन ठहरने की इजाजत और देदी। वैसे आमतौर से वहां किसीको एक दिन से अधिक ठहरने नहीं दिया जाता।

दूसरे दिन ठहरने का उद्देश्य यह था कि अपने संदेह का भली भांति जांचकर सकूं। उस दिन भी पहले दिन की भांति दस बारह आदमी आये। कल जो आदमी थे उनमें से शेष तो चले गये थे पर तीन वहीं जमे हुए थे, वे तीन ही शेष आगन्तुकों की बातें कुरेद कर पूछ रहे थे। जो आदमी कल स्टेशन से मेरे साथ आया था वही आज भी स्टेशन से दो आदमियों को साथ लाया। अब मैं जान गया कि यह चार बँधे हुए दलाल हैं। लोगों से बातें पूछकर शाक्त को बताते रहते हैं और वह उन्हीं बातों को अपनी सिद्धाई जताते हुए दुहरा देता है।

आज जो आदमी आये थे उनमें से एक किसी सरकारी स्कूल का अध्यापक था। उसे अलग ले जाकर मैंने सब बात कहदी और इस बात पर सहमत कर लिया कि उन पूछने वालों को सारी बातें गलत सलत बतावेगा। उसने ऐसा ही किया। दूसरे दिन अन्य सब लोगों की बातें तो ठीक ठीक बताई गईं पर अध्यापक के सम्बन्ध में कही गई सब बातें बिलकुल गलत थीं। मेरा नम्बर आया तो कल वाली बातें ही फिर बताई गईं जो सर्वथा असत्य थीं।

त्रिकालदर्शी शाक्त के माया चार का भंडाफोड होता हुआ मैं वहां से वापिस चला आया।

ऐसा योगी जिसके पेशाब में दिये जलते थे।

सिन्ध प्रांत में शिकारपुर के पास एक ऐसे योगी की चर्चा सुनी जिसके पेशाब में दिये जलते थे। हिन्दी भाषा में "पेशाब में दिये जलना" एक कहावत है जिसका प्रयोग तेजस्विता प्रदर्शन के लिए होता है। जैसे किसी आदमी का आतंक चारों ओर छाया हुआ हो, उसका आदेश मानने के लिए बड़े बड़ों को विवश होना पड़ता हो तो उस आदमी के लिए कहा जायगा कि "उसके पेशाब में दिये जलते हैं।" इस कहावत को चरितार्थ करके अपनी तेजस्विता और योग साधना की सफलता प्रकट करने के लिए वे योगी जी पेशाब में दिये जलाते थे। उनके शिष्यों का कहना था कि वे दिन भर में केवल एक बार पेशाब करते हैं और जब करते हैं तब वह घी ही निकलता है। उनके पेशाब करने का समय शाम को ५ बजे था उस समय सैकड़ों दर्शक इस आश्चर्य को अपनी आंखों से देखने के लिए एकत्रित होते थे।

कराची में मुझे यह पता लगा था मैं वहां से शिकारपुर के लिए चल दिया, वहां से ढूंढते २ उन योगिराज के पास जा पहुँचा। शाम को चार बजे पहुँचा था, एक घंटे बाद ही पेशाब करने की बेला आगई। अपने कमरे में से महात्माजी निकले उनके आते ही कीर्तन आरंभ होगया। और तुरन्त ही पेशाब करने की तैयारियां होने लगीं। जिधर को मुंह किये बैठे थे उधर को योगीजी ने पीठ करली। दर्शकों में से जिसे आज्ञा प्राप्त होचुकी थी, वह एक चांदी का कटोरा हाथ लेकर महात्माजी के सामने पहुँचा। और कटोरे को आगे कर दिया, योगी जी उस कटोरे में पेशाब करने लगे, जब कर चुके तो वह कटोरा दर्शकों के सामने लाया गया। देखने में वह पिघले हुए शुद्ध घी की तरह था। जाड़े के दिन थे थोड़ी देर में ठंडी हवा लगते ही वह जमने लगा। अब योगिराज के सिंहासन के पास जो दस दस बड़े बड़े पीतल के दीपक, दीवटों

पर सजाये हुए रखे थे उनमें यह घी डाला गया और बत्तियाँ डालकर दीपक जला दिये गये। सब लोग जय जयकार कर उठे। शंख, घड़ियाल, तुरही, नगाड़े आदि बजने लगे। कटोरे में बचा हुआ घी प्रसाद की तरह उंगली की नोक पर लिया देखा, सूँघा, परीक्षा करके सराहना की, और आंखों में लगाया। जितने भी दर्शक थे सबका पूरा पक्का विश्वास होगया कि योगिराज पहुँचे हुए हैं, उनका आत्मा दिव्य है, शरीर दिव्य है और मलमूत्र तक दिव्य है। इस दिव्यता के कारण उन्हें जनता का धन और सम्मान प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता था।

अनेकों प्रपंचों में से पार निकलने के कारण मेरा मन बहुत संशयावृत्त था। सोचता था कि कटोरे में था तो कोई पर्दा होगा या पेशाब को किसी प्रकार पलट कर घी डाल दिया जाता होगा पर जब आंखों से देखा वहां ऐसी कोई गुंजायश न थी। क्योंकि योगी जी नंगे बदन रहते थे, कमर में एक छोटा सा कपड़े का टुकड़ा था. भरी सभा में पंठ फेर कर उनने पेशाब किया था, चांदी का कटोरा सैकड़ों हाथों में होकर गुजरा था, कहीं किसी बात में कोई रहस्य मालूम न पडता था। यह सचमुच आश्चर्य जनक बात थी, मनुष्य का मूत्र विशुद्ध घृत जैसा हो यह वास्तव में बड़े अचम्भे की बात थी।

पूर्ण सत्यता को जानने के लिए मैंने वहां अड्डा डालकर रहने का निश्चय किया। दर्शकों के चले जाने के बाद मैं योगिराजजी से मिला। योग मार्ग में मेरी रुचि, ऊँची विद्या, आकर्षक व्यक्तित्व, मृदुल स्वभाव इन सब बातों ने उनके ऊपर काफी प्रभाव डाला। ऐसे व्यक्तियों को अपने पास रखने में, उन्हें शिष्य बना लेना में साधुलोग अपना बड़ा लाभ देखते हैं, उनकी इस कमजोरी को भली भांति जानता था इसलिए अपना परिचय और भावी कार्यक्रम उन्हें इस प्रकार बताया गया जिससे उनकी कृपा सहज ही मुझे प्राप्त होगई। जिस कमरे में महात्माजी रहते थे उसके पीछे वाले कमरे में मुझे रहने को जगह देदी गई। मैं उसमें सुख पूर्वक रहने लगा।

सत्यता की जांच किस प्रकार हो ऐसे उपाय मैं खोजने लगा। जहां पेशाब किया जाता था वहां कोई चालबाजी न होती थी यह मैंने दो रोज में सब प्रकार जांच लिया। एक दिन हाथ में कटोरा लेकर मैंने स्वयं पेशाब कराया. मूत्रेन्द्रिय से घी निकलते मैंने खुद अपनी आँखों देखा था। यदि कोई गड़बड़ होती होगी तो वह उनके रहने के कमरे में ही की जाती होगी ऐसा विचार करके मैं ऐसा उपाय सोचने लगा जिससे उनके ऊपर निगरानी रखी जासके। हर वक्त द्वारपाल रहता था, किसी को उनके पास जाने की आज्ञा [illegible] थी कमरे में कोई अन्य दरवाजा या खिड़की न [illegible] अब किस प्रकार सफलता मिले, इस ढूँढ खोज में मैंने योगीजी के कमरे के चारों ओर बड़े ध्यान पूर्वक कई चक्कर लगाये कि कोई मार्ग ऐसा मिले जिससे होकर कमरे के भीतर की बातें दिखाई देसकें, ऐसा कोई छिद्र दिखाई न पड़ा। अब मैं अपने कमरे की छत पर चढा और दूसरे कमरे के लिए कोई छिद्र ढूँढने लगा। सौभाग्य वश छत से नीचे एक छोटा रोशनदान मिला। खडे होकर उसमें से योगी जी वाले कमरे का आधा भाग देखा जासकता था। इस छिद्र में आंखें लगा कर पेशाब करने के दो घंटे पूर्व खड़ा हो गया और देखने लगा कि योगी जी कोई विशेष क्रिया तो नहीं करते हैं।

जब पांच बजने में पन्द्रह मिनट बाकी रहे उन्होंने बोतल में रखी हुई एक पतली चीज निकाली उसे कटोरी में उडेला और मूत्रेन्द्रिय को [illegible] डुबा दिया। उन्होंने चार पांच लम्बे लम्बे [illegible] खींचे और कटोरी खाली होगई। कटोरी को [illegible] ओर रखकर उन्होंने मूत्रेन्द्रिय को कुछ ऐसी गांठ सी बनाई और ऊपर से लंगोट कस कर लिया। इस क्रिया को करने के बाद वे दर्शकों के समक्ष चले गये। मैं भी चुपचाप छत पर से

कर उसी भक्त मंडली में एक ओर जा बैठा। नित्य का क्रम यथावत् चलने लगा।

अब घृत मूतने की दिव्य शक्ति का सारा रहस्य मेरी समझ में आगया। हठयोगी आमतौर से बज्रोली क्रिया करते हैं, मूत्र मार्ग से जल ऊपर खींचना और फिर उसे निकाल देना बज्रोली क्रिया कहलाती है। यह कुछ भी कठिन नहीं है। हठ योग के अनेकों साधकों को हमने यह करते देखा था। थोड़े ही दिनों के प्रयत्न से अभ्यास होजाता है। इसी क्रिया का अभ्यास इन योगीजी ने कर रखा था। वे पानी की जगह पर मूत्रेन्द्रिय से घी चढा लेते थे, इन्द्रिय को ऐठकर गांठ सी बनाने और ऊपर से लंगोट कसने का प्रयोजन यह था कि चढाया हुआ घी फैलने न पावे। पेशाब से निवृत्त होकर घी चढाया जाता है जिससे कि कहीं घी और पेशाब मिल न जांय।

रहस्य मालूम होगया था तो भी उसकी एक बार पुष्टि करने की और आवश्यकता थी। दूसरे दिन जब वे योगीजी पांच बजे जनता के सामने आये तो मैं अवसर पाकर उनके कमरे में चुपके से घुस गया और उस घी की भारी बोतलको अलमारी में से निकाल लाया, अलमारी ज्यों की त्यों बन्द करदी। दूसरे दिन नियत समय पर जब कि महात्मा जी के आने की तैयारी होरही थी, अचानक सन्देश आया कि योगीजी समाधि मग्न होगये हैं वे आज दर्शन देने न आवेंगे। मैं समझ गया कि यह समाधि और कुछ नहीं घी की बोतल ठीक समय पर न मिलने और उसकी दूसरी व्यवस्था तुरन्त ही न हो सकने की समाधि है।

जानकारी पूरी होगई। दूसरे दिन खिन्न चित्त, उदास चहरा लेकर मैं वहां से चल दिया।

मूक प्रश्न बताने वाले ज्योतिषी।

मुख से बिना कहे पूछे जाने वाले प्रश्नों को मूक प्रश्न कहते हैं। अनेकों ज्योतिषी मूक प्रश्न बताते हैं हमें ऐसे ज्योतिषियों से कितनी ही बार काम पडा है। उनके भेदों को जानने में भी हमें असाधारण परिश्रम तथा काफी समय लगाना पडा है।

एक बार आगरा में एक ज्योतिषीजी आये बेलनगंज की धर्मशाला में ठहरे, शहर भर में मुनादी तथा इश्तहारों द्वारा सूचना कराई गई कि ज्योतिषीजी मूक प्रश्नों का उत्तर देते हैं हम भी पहुँचे। उनका तरीका यह था कि जो आदमी उनके पास जाय वह एक कागज पर अपना प्रश्न लिख कर अपने पास चुपचाप रखले, ज्योतिषीजी उस प्रश्न को भी बताते थे और उसका उत्तर भी देते थे। फीस हर प्रश्न की २) थी। सबेरे से शाम तक पचास साठ प्रश्न पूछने वाले उनके पास पहुँचते थे। आसानी से सौ रुपये रोज की आमदनी हो जाती थी। प्रश्नों को प्रायः ठीक ही बता दिया जाता था।

बारीकी से देखने पर मालूम हुआ कि इस विद्या का रहस्य उस कापी में था जो वहां आमतौर से खुली हुई पडी रहती थी पाठक उसी के कागजों पर अपने प्रश्न लिखते थे और कागज फाड कर अपनी जेब में रख लेते थे। इस कापी में जो कोरे कागज थे वे चतुरता पूर्वक रासायनिक ढङ्ग से बनाये गये थे। कागजों पर पीठ पर बढिया साबुन घिस दिया गया था। पेन्सिल से लिखने पर कार्बन पेपर के रंग की भांति कागजों की पीठ पर घिसा हुआ साबुन नीचे वाले कागज पर लग जाता था। कार्बन के लिखे हुए अक्षर नीले रंग के होने के कारण साफ दिखाई पडते हैं पर साबुन के अक्षर सफेद और हलके होने के कारण दीखते नहीं पर उन्हें विशेष उपाय से पढा जासकता है। उस नकल आगे हुए कागज पर राख, गुलाल, रामरज, गेरु का चूर्ण या कोई अन्य ऐसी ही बारीक पिसी हुई रंगीन चीज डाली जाय तो वे साबुन के स्थान पर वह चीज चिपक जाती है और अक्षर स्पष्ट रूप से पढे जासकते हैं। या उस कागज को पानी में डुबो दिया जाय तो भी वे साबुन के अक्षर दिखाई देसकते हैं। यही उन ज्योतिषीजी की विद्या थी इसी के बल पर वे कमाते खाते थे। थोड़े से

परीक्षण में ही उनके इस रहस्य को मैंने जांच लिया।

एक ऐसे ही ज्योतिषी से जबलपुर में भेंट हुई। उनका रहस्य यह था कि सादा कागज के टुकड़े काट कर रख देते थे, पेन्सिलें पड़ी रहती थीं। कागज पर पेन्सिल से लिखते समय कोई कड़ी चीज नीचे रखने की आवश्यकता पड़ती है, इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए वहां कितनी ही मोटी मोटी जिल्ददार किताब पड़ी थीं। जिल्दों के पुट्ठे के ऊपर एक हलका कागज चढाया हुआ था। उस कागज और पुट्ठे के बीच में कार्बनपेपर तथा सफेद कागज लगा रहता था। उस पुट्ठेदार किताब के ऊपर कागज रखकर जो कुछ लिखा जाता था उसकी नकल बीच के सफेद कागज पर कार्बनपेपर द्वारा होजाती थी। ज्योतिषीजी का सेवक उन पुस्तकों को वहां से लेजाता था और नकल वाला कागज निकाल कर पुस्तकों को वहीं रख जाता था, इस नकल को देखकर ज्योतिषीजी मूक प्रश्न बताते थे।

एक ज्योतिषी ने अपना अलग ही नया तरीका निकाला था. उससे बम्बई में भेंट हुई। प्रश्नकर्ता उसके सामने जाकर कुर्सी पर बैठता था,वह अपनी मेज के दराज में से एक स्लेट और पेन्सिल निकालता था,प्रश्न कर्ता की ओर देख २ कर वह जल्दी२ सिलेट पर कुछ लिखता था और पूरी सिलेट लिख जाने पर उसे दराज में ही फिर रख देता था। अब प्रश्नकर्ता से बात चीत होती आप कहां से पधारे हैं? क्या काम है? आदि सारी बातें पूछते, जब वार्तालाप पूरा हो चुकता तो मेज के दराज में से सिलेट निकालकर प्रश्नकर्ता के हाथ में देते और पढने को कहते। उस स्लेट में वही सब बातें लिखी होतीं जो प्रश्नकर्ता ने बताई थीं। ज्योतिषी कहता आपके आते/ही बिना आपसे एक शब्द पूछे सारी बातें जानली थीं और इस स्लेट पर लिख कर रखदी थीं। प्रश्नकर्ता बेचारा आश्चर्य में पड जाता और ज्योतिषीजी की विद्या से प्रभावित होकर उन्हें शक्तिभर भेंट दक्षिणा देता।

पता चलाने पर ज्ञात हुआ कि ज्योतिषीजी की बडी मेज के दोनों ओर ज़मीन तक जाने वाले बड़े२ दराज़ थे, उसमें नीचे एक आदमी बैठा रहता था। ज्योतिषी आरंभ में जो कुछ लिखते वह व्यर्थ की कलम घिसावट थी। वैसी ही दूसरी स्लेट लिए एक आदमी दराज में बैठा रहता था और जो वार्तालाप दोनों में होता था उसे सुनकर तथ्य की बातें लिखता जाता था। वही स्लेट को अन्त में प्रश्नकर्ता को दिखाई जाती। वह बेचारा समझता कि मेरी बार्ता से पूर्व ही यह स्लेट लिखी गई थी।

इस प्रकार के एक नहीं अनेकों ज्योतिषी, तेजी मंदी बताने वाले, भविष्यवक्ता देखे उनमें से मुझे किसी के पास भी कोई ठोस चीज न मिली। यों तो अटकल से दस बातें कही जांय तो उनमें से पांच छै ठीक निकलती ही हैं। इन ठीक निकली बातों को लेकर ज्योतिषीलोग अपनी विद्या का ढिंढोरा पीटते हैं और जो बातें गलत निकली थीं उनको दबा देते हैं।

भूतों के एजेन्ट।

भूतों के एजेन्ट गांव गांव मिल जाते हैं। जिन्हें सियाने, ओझा, भोपा आदि कहते हैं। यह लोग भूतों का अस्तित्व सिद्ध करने, उन्हें बुलाने, भागने तथा उनके द्वारा कई प्रकार के कार्य कराने के करिश्मे दिखाते हैं। छोटे बालकों के दस्त, बुखार अधिक रोना, हाथ पांव मरोडना, आंखें न खोलना, उलटी सरीखे रोग भूत चुडैलों के आक्रमण समझे जाते हैं। अशिक्षित तथा अन्ध विश्वासी लोगों में ओझाओं द्वारा झाड फूंक करना ही इसका उपाय समझा जाता है। स्त्रियों का विशेष रूप से भूतों पर विश्वास होता है। उनके बहुत से रोग भूत बाधा माने जाते हैं, मृगी, बन्ध्यापन, गर्भपात, बच्चों का मर जाना, दूध न उतरना, दुःस्वप्न. मूर्छा. आदि रोगों को भूत चुडैल का कारण समझा जाता है। आवेश युक्त अन्य रोग भी इसी श्रेणी में गिने जाते हैं उन्माद, आवेश, भयातुरता, तीव्रज्वर, प्रलाप, तीव्र शूल आदि रोग चाहे वे

पुरुष को हों चाहे स्त्री को भूतों के उपद्रव समझे जाते हैं। कंठमाला, बिषबेल सरीखे फोड़े, सर्प का काटना यह भी प्रेतात्माओं से संबंधित समझा जाता है। सूने घर में चूहों द्वारा मचाई हुई खडबड बिल्ली बन्दर आदि का कूदना कभी कभी भूत बन जाते हैं। किसी मृत जानवर या मनुष्य की हड्डियों का फास्फोरस कभी कभी वायु के संस्पर्श से अचानक जल उठता है, केंचुए की मिट्टी का फास्फोरस जमीन पर प्रकाशवान हो उठता है। चिड़ियां अपने खाने के लिए केंचुओं को घोंसले में रखलेती हैं वहां भी फास्फोरस चमकने लगता है। इस प्रकार के प्रकाश भूतों की करतूत का प्रत्यक्ष प्रमाण बताया जाता है।

ऐसा ही कोई कारण उपस्थित होने पर इन सयाने लोगों का आह्वान किया जाता है। वे अपनी अलौकिकता को सिद्ध करने के लिए नींबू को चाकू से काटकर रस की जगह खून निकालना, लोटे में चावल भरना और उस भरे हुए लोटे को चाकू की नोक से चिपका कर अधर उठा लेना, कच्चे सूत के धागे पर तेल का भरा हुआ जलता दीपक उठाना, थाली में पानी भर कर उसमें दीपक रखना ऊपर से उलट मुँह मटकी रख देना और फिर थाली का पानी खिचकर ऊपर मटकी में चढ जाना, लोटे में पानी भर कर एक हलके कपड़े से मुँह बांध कर लोटे का उलटा लटकादेना घड़े में से छनकर जरा भी पानी न फैलना आदि अनेकों प्रकार के चमत्कार दिखाकर अपने अन्दर अलौकिकता सिद्ध करते हैं, परन्तु वस्तुतः उनमें कोई चमत्कार नहीं होता, यह बात साइंस, रसायन या चतुरता के ऊपर निर्भर होती है। देखने वाले उससे प्रभावित होते हैं और सयाने की योग्यता पर विश्वास करके उसकी भेंट देने और उसकी इच्छानुसार कार्य करने के लिए प्रस्तुत होजाते हैं।

स्त्रियों को भूतावेश बहुत आते हैं। इसका कारण मनोवैज्ञानिक है। उन्हें बुरी तरह परतंत्र रहना पडता है, घर के छोटे पिंजड़े में पर्दे के कठिन बन्धनों से जकड़ी हुई वे रहती हैं, मुद्दतों एक स्थान पर रहते रहते उनका मन ऊब जाता है, पिता के घर की याद आती है मैके जाने को जी भटकता है पर उनकी अपनी इच्छा का कोई मूल्य नहीं, सुसराल का अरुचि कर वातावरण, वहां वालों का दुर्व्यवहार आदि अनेक कारणों से स्त्रियों को मानसिक क्षोभ उत्पन्न होता है, वे भीतर ही भीतर घुटती हैं। मनोविज्ञान शास्त्र की दृष्टि से इस 'घुटन' का उनके ऊपर बहुत बुरा प्रभाव पडता है। दबी हुई अतृप्त इच्छाऐं किसी विस्फोट के लिए अवसर ढूँढती रहती है। अनेकों स्त्रियों को हिस्टेरिया के दौरे आने लगते हैं। जिन परिवारों में भूत वाद पर विश्वास किया जाता है उनकी इस प्रकार की आत्मत्रास से पीडित स्त्रियां भूतों के बारे में सोचने लगती हैं और उन्हें भूत शिर आने लगते हैं। उनका विश्वास और आत्मत्रास मिलकर एक वास्तविक मानसिक रोग बन जाता है। यह रोग कभी कभी प्राणघातक भी सिद्ध होता है। नवयुवती स्त्रियां जब तक माता नहीं बनतीं तब तक उनको भूतावेश का भय अधिक रहता है, जब उनके बालक होजाते हैं तो मस्तिष्क की दिशा दूसरी ओर मुड जाती हैं, ऐसी दशा में भूतोन्माद का भय बहुत ही कम रह जाता है।

रोग धीरे धीरे समय पाकर अपने आप अच्छे होने लगते हैं, स्त्रियां सहानुभूति पाकर अपनी ओर लोगों का अधिक ध्यान आकर्षित होने पर एवं सयाने के उपचार से प्रभावित होकर अच्छी होजाती हैं, आवेश उन्माद आदि भी समय पाकर ठीक होजाते हैं, इसका श्रेय सयाने को मिलता है, उनकी रोजी चलती रहती है। भूतों की अनेकों कथाऐं कही जाती है पर उन कथाओं की कडी जांच करने पर मालूम होता है कि उनमें तीन चौथाई से अधिक तो बिलकुल कल्पित, मन घड़ंत किम्बदंतियां होती हैं। आश्चर्य एवं कौतूहल उत्पन्न करने के लिए कितने ही लोग कह देते हैं कि ऐसा हमने देखा था, पर असल में उनने देखा नहीं–सुना होता है, और उस सुनने के आधार का पता लगाने पर मालूम पडता है कि किसी ने यों

ही गप्प उडा दी है। एक चौथाई से कम घटनाऐं कुछ सार गर्भित होती हैं, उनके कारण किसी अन्य वैज्ञानिक तथ्य पर अवलम्बित होते हैं।

भूत उतारने वाले बड़े बड़े प्रसिद्ध स्यानों के यहां हम पहुँचे हैं। उनके प्रतिदिन दस बीस ऐसे रोगी पहुँचते और अच्छे होते थे। भूतों का आवेश बुलाना, रोगी पर चढ़े हुए भूत से बातें पूछना, भूत उतारने की क्रिया करना, यही सब व्यापार दिन भर उनके यहां होता था। एकने तो बहुत बड़े लट्ठे में कितनी ही जंजीरें बांध रखीं थीं उसका दावा था कि इस लट्ठे पर जंजीरों से उसने कितने ही बड़े बड़े भूतों को बुला रखा है। इस भूत उतारने वालों में से प्रायः सभी से हमने विनय पूर्वक, सेवा से प्रसन्न करके, लोभ देकर, चुनौती से उत्तेजित करके यह प्रार्थनाऐं की कि वे हमें भूत को दिखादें या हमारे ऊपर भूतावेश बुलादें, पर उनमें से किसीने भी यह छोटी सी प्रार्थना स्वीकार न की। यदि सचमुच इतने भूतों को यह लोग इधर से उधर करते हैं तो एक भूत हमारे ऊपर छोड देने में इनको क्या लगता था।

इतना तो माना जासकता है कि जिन लोगों को किसी कारण वश भूतोन्माद है उन्हें मनोवैज्ञानिक चिकित्सा में उस रीति से भी उपचार किया जासकता है जिस रीति से कि सयाने लोग करते हैं। परन्तु सयानों में वस्तुतः भूत बुलाने, भगाने आदि की योग्यता होती है, यह नहीं कहा जासकता। सयाने अपने ऊपर जो भूतावेश बुलाते हैं उसके वास्तविक होने में भी पूरा २ सन्देह है। भूतों की सहायता से किसी को बीमार कर देने, मार डालने या लडका उत्पन्न कराने की बात भी असत्य है। सयाने लोग अपनी प्रतिष्ठा एवं लाभ के लिए इस प्रकार के आडम्बर रचा करते हैं। अनेकों सयाने लोगों से मिलके बातें करने और जांच करने पर हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे है।

एक नई किस्म के सुशिक्षित सयाने कछ दिनों से और पैदा हुए हैं। इनका तरीका विलायती है। यह तरीका स्प्रिचुएलिज्म कहलाता है। इंग्रेजी में इस विषय पर कितनी ही पुस्तक हैं। देशी भाषाओं में भी थोडी बहुत पुस्तकें इस विषय पर मिल जाती हैं। यह लोग प्रेतों को बुलाते हैं और उनसे वार्तालाप करते हैं। इस तरीके के अनुसार प्रेत प्रायः लिखकर उत्तर देते हैं। कई आदमी गोलचक्र बाँधकर बैठते हैं बीच में एक मेज रख लेते हैं। अब कई तरीकों से प्रेतों से वार्तालाप किये जाते हैं। जैसे (१) ओटो मैटिक राइटिंग द्वारा इस विधि में मन ही मन ऐसी भावना की जाती है कि हमारे ऊपर भूत आवेश आवे। थोडी देर में किसी के ऊपर आवेश आता है। उसको कागज और पेन्सिल देदी जाती है, जो प्रश्न पूछे जाते हैं उनका वह आवेश मग्न व्यक्ति उत्तर लिखता है, इन उत्तरों को प्रेत का उत्तर समझा जाता है। (२) प्लेनचिट द्वारा—यह लकडी का एक टुकडा होता है जिसमें पहिए लगे होते हैं, इसमें एक छेद में पेन्सिल लगादी जाती है। इस प्लेनचिट के नीचे कागज रख देते हैं और ऊपर कई व्यक्ति हाथ रखते हैं, थोडी देर में पहिया चलता है और पूछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्लेनचिट में लगी हुई पेन्सिल लिखने लगती है (३) तिपाही द्वारा—तीन पैर की मेज पर कई व्यक्ति हाथ रखकर बैठते हैं, थोडी देर में प्रेत के आने पर मेज के पाये उठने गिरने लगते हैं और खट खट होती है। इस खटखट की संकेत माला बनाली जाती है, और तार घर की डेमी की गर-गट्ट—ध्वनि से जिस प्रकार शब्द बनते हैं वैसे ही मेज के पायों की खटखट के संकेतों से मतलब निकालते हैं। इस प्रकार के और भी कई तरीके हैं।

इन तरीकों के बारे में कई सन्देह उत्पन्न होते हैं। ओटोमेटिक राइटिंग (स्वलेखन) के बारे में यह सन्देह उत्पन्न है कि जो विचार पेन्सिल से लिखे जाते हैं वह लेखक के अपने हैं, चाहे वे उसने स्वसंमोहन के आवेश में लिखे हों या यों ही ठठोली में। प्लेनचिट चलाने में या मेज के पाये खटकाने में चक्र में बैठा कुछ कोई व्यक्ति यह सब हरकतें कर सकता है। इस ओर ध्यान न दिया जाय तो

भी जो उत्तर प्राप्त होते हैं वे सन्तोष जनक नहीं होते। ऐसी बातें जिनकी जांच नहीं हो सकती उनका वर्णन प्रेतों द्वारा मिलता है। जैसे परलोक कैसा है? वहां प्रेत लोग किस प्रकार रहते हैं? क्या खाते हैं? क्या करते हैं? आदि। इन प्रश्नों के जो उत्तर दिये जाते हैं उनकी सत्यता असत्यता के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता। इसकी सचाई की जांच का तरीका यह है कि ऐसे प्रश्न पूछे जांय जिनका ठीक उत्तर केवल उस स्वर्गीय आत्मा को ही मालूम हो, जिन बातों की जानकारी उस आवेश वाले व्यक्ति को किसी प्रकार होने का अन्देशा हो वह प्रश्न न पूछे जांय। कभी कभी कोई भुलावे में डालने वाले प्रश्न भी पूछे जांय। ऐसे दो चार प्रश्न पूछते ही इन लोगों की कलई खुल जाती है और सारा खयाली महल ढह पड़ता है।

बम्बई के एक सुप्रसिद्ध प्रेतविद्या के ज्ञाता एक बार आगरा पधारे। उनका सार्वजनिक भाषण हुआ। एक प्रोफेसर साहब के यहां वे ठहरे हुए थे। हम कई मित्र उनसे मिलने गये। चक्र किया गया। हमारे साथ जो मित्र वहां मौजूद थे, उन्हीं के प्रेतात्मा बुलाई गई। वह आगई और उत्तर देने लगी। हमारे पिताजी बुलाये गये और उनसे पूछा गया कि आप जब रामेश्वर यात्रा गये थे तब के कुछ संस्मरण सुनाइए। उन्होंने बहुत सारे संस्मरण सुनाये पर वास्तव में हमारे पिता जी कभी भी रामेश्वर न गये थे। तीसरे मित्र ने अपनी माताजी बुलाईं और छोटी बहिन के लिए कुछ संदेश मांगा। माताजी ने बहुत सी बातें अपनी बेटी के संबंध में कहीं, पर वास्तव में उनकी कोई बहिन न थी। तीनों ही प्रश्न गलत थे तीनों में से एक के लिए भी प्रेतों ने यह न कहा कि यह गलत है। बल्कि सविस्तार उत्तर दिये। इससे हम लोगों की आस्था उनके परलोक वाद पर से उठ गई। इसी तरीके को काम में लेकर हमने कितने ही चक्र करने वालों को छकाया। यह बुद्धि का युग है। जब तक किसी बात को ठीक प्रकार प्रमाणित न कर दिया जाय, तब तक उस बात को विज्ञ समाज स्वीकार नहीं कर सकता।

भविष्य वक्ताओं की चतुरता

भविष्य वक्ताओं की अनेक श्रेणियां हैं। वे अनेक रीतियों से काम करते हैं। ज्योतिषी लोग पचाग, जन्मपत्र आदि में ग्रहणक्षत्र देख कर, सगुनियां-स्वर तथा अन्य शकुनों को देख कर फल बताते हैं। चक्रों पर हाथ रखवा कर रमल के पांसे डलवा कर हाथ देख कर, सामुहिक विधि से भविष्य बताया जाता है। आवेश में आये हुए देवी देवता भी बताते हैं अमुक तिथि को इस प्रकार हवा चले, धूप निकले, पानी बर्षे तो उसका वर्षा तथा फसल में भले बुरे होने का भविष्य किसान लोग अनुमान करते हैं। सांप के बोलने, गिरगिट के रङ्ग बदलने, कुत्तों के रोने, आदि से आगे घटित होने वाली घटनाओं का कुछ लोग अन्दाज लगाया करते हैं।

भविष्य पूछने वालों में आमतौर से वे लोग होते हैं जिन्हें वर्तमान में कोई विशेष चिन्ता होती है और भविष्य में उस चिन्ता से छुटकारा पाकर किसी आशामय परिस्थिति में प्रवेश करना चाहते हैं। आमतौर से खोई हुई वस्तुओं का पता पूछने वाले, खोये हुये बच्चे या घर से भागे मनुष्य की खोज करने वालों, विवाह के इच्छुक, सन्तान के अभिलाषी, परीक्षा फल जानने की तलाश करने वाले, नौकरी बदली, तरक्की पूछने वाले व्यापार की तेजी मंदी, सट्टा हड़ा, आदि पूछने वाले होते हैं। जैसे वैद्य लोग बहुत दिन के अनुभव के बाद शकल सूरत और रङ्ग ढङ्ग देख कर बता देते हैं कि यह किस रोग का मरीज है और प्रायः बहुत अंशों में उनका अन्दाज ठीक निकलता है उसी प्रकार भविष्य-वक्ता लोग भी प्रश्नकर्ताओं के रङ्ग ढंग, मुखमुद्रा आदि को देख कर यह सहज ही अंदाज लगा लेते हैं कि वह क्या पूछना चाहता है। इस परख के आधार पर वे लोग सहज ही किसी निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं और प्रायः बिना पूछे ही बता देते हैं कि प्रश्नकर्ता क्या पूछने आया है। बहुत से भविष्यवक्ता उस सीमा तक पहुँचे हुए

नहीं होते वे प्रश्नकर्ता के अपना उद्देश्य प्रकट करने पर ग्रह, गणित या अन्य क्रिया कलाप करके उत्तर देते हैं।

उत्तर देते समय भविष्यवक्ता लोग ज्योतिष पर ही निर्भर नहीं रहते वरन यह देखते हैं कि स्थिति क्या है ? कैसी आशा है ? जो परिस्थिति सामने है उसे देखते हुए किस प्रकार की आशा है ? इन अनुमानों की सूक्ष्म विवेचना करके जो उत्तर देते हैं उनके उत्तर प्रायः बहुत अंशों में ठीक उतरते हैं। उनमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हर एक बुद्धिमान मनुष्य अपनी विवेचना शक्ति के द्वारा बारीकी से सोचता है और अपनी दैनिक बातोंके संबंध में आगे की बातों का अन्दाज लगाता है। और वह अन्दाज बहुत अंशों में ठीक भी होता है यदि ठीक न हो तो उसका कारोबार ठप हो जाय। जिस बुद्धि-सूक्ष्मता के आधार पर चतुर पुरुष अपने व्यवहारिक कार्यों में सफल होते हैं उसी बुद्धि सूक्ष्मता से ज्योतिषी लोग दूसरों के सम्बंध में अन्दाज लगाते हैं। वे अनुमान बहुत अंशों में ठीक उतरते हैं। ठीक उतरने पर वे सिद्ध समझे जाते हैं प्रशंसा के पात्र बनते हैं और धन लाभ करते हैं।

कभी कभी बताये हुए उत्तर गलत भी हो जाते हैं क्यों कि अटकलें सदा ही ठीक नहीं उतरतीं। गलत निकली हुई बातों को यह कह कर टाल दिया जाता है, परमात्मा की इच्छा प्रबल है, भाग्य के लिखे को कोई मेट नहीं सकता बुरे दिन होने पर सोना पकडो तो मिट्टी हो जाता है, हमारी विद्या तो सत्य है पर उस विद्या के अनुसार निष्कर्ष निकालने वाले से भूल होजाने पर उत्तर गलत होजाते हैं, हम मनुष्य हैं इसलिए हमसे भी भूलें होना स्वाभाविक है। इसके, अतिरिक्त जन्म समय ठीक न मालूम होने, प्रश्न करने के लिए प्रातःकाल आदि शुभ समय में न आने, प्रश्न पूछने के लिए आने के साथ फल, फूल, मिष्टान्न, दक्षिणा आदि मांगलिक चीजें पर्याप्त मात्रा में न लाने इत्यादि बहाने आसानी से बनाये जासकते हैं।

सोना, चांदी, रुई, तिलहन, आदि की तेजी मंदी के सट्टे करने वालों का आधार कल्पना शक्ति ही तो होती है। सटोरिये अन्दाज ही तो लगाया करते हैं कि आगे मन्दी आवेगी या तेजी जब उनका निशाना ठीक बैठ जाता है तो मालो माल होजाते हैं नहीं तो दिवालिया बनते देर भी नहीं लगती। जैसे को तैसे साथी मिलते रहते हैं। अक्ल की फातियां उडाने वाले ज्योतिषी लोग उन्हें मिल जाते हैं। लगा तो तीर नहीं तो तुक्का बना बनाया है।

इन तेजी मंदी बताने वालों को चुनौती देते हुए एक बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति ने हमारे पास शर्तनामा भेजा है कि यदि कोई भविष्य-वक्ता प्रति दिन केवल एक वस्तु की तेजी मंदी ठीक बतला दिया करे तो उसे केवल एक प्रश्न बताने के लिए एक हजार रुपया प्रति दिन दिया जायगा। इसके लिए वे एक वर्ष का वेतन एक हजार रुपया प्रति दिन के हिसाब से जमा कर देने और शर्तनामा अदालत में रजिस्ट्री करने को तैयार हैं। शर्तनामा हमने हिन्दुस्तान के प्रायः सभी ज्योतिषियों के पास भेजा है पर किसी ने भी उस चुनौती को अब तक स्वीकार नहीं किया है। और भविष्य में कोई उस चुनौती को स्वीकार करेगा ऐसी आशा भी नहीं है।

हम लोग देखते हैं कि यह लोग कुछ फीस या दक्षिणा लेकर तेजी मंदी आदि बताते हैं। इससे स्पष्ट है कि पैसे की इच्छा तो उनको है अब पैसे की आवश्यकता और इच्छा उनको है ही और तेजी मंदी आदि जानते ही हैं तो वे भी स्वयं ही सटोरिये बन कर मालोमाल क्यों नहीं बन जाते ? दूसरी बात यह है कि जब भविष्य सुनिश्चित है और उस भविष्य को वे जानते भी हैं तो फिर अपने बारे में भी जानते होंगे कि हमें कब कितनी आमदनी होगी यदि यह मालूम ही है कि इतना पैसा हमको अमुक समय मिल ही जायगा तो फिर ज्योतिष विद्या या और कोई व्यापार करने की उनको क्या आवश्यकता है ? बैठे बैठे मौज करें जो भाग्य का

होगा अपने आप आ जायगा। यह दोनों बातें बहुत ही सीधी एवं सरल हैं पर कोई भी भविष्य-वक्ता इस मार्ग पर चलता दिखाई नहीं देता। इससे प्रतीत होता है कि किसी ज्योतिषी को स्वयं अपने ऊपर विश्वास नहीं है। ऐसी दशा में दूसरे विचार वाले लोग उन पर किस प्रकार विश्वास करें। यह एक प्रमुख समस्या है।

दिव्य दर्शी तान्त्रिक

अप्रत्यक्ष गुप्त बातों को जानने का दावा करने वाले अनेकों व्यक्ति हमारे क्षेत्रों में आये। मैस्मरेजम के नाम पर कितने ही लोग इस प्रकार के खेल करते हैं। एक बार हमने देखा कि एक मैस्मरेजम करने वाले ने एक लड़के को मंत्र वल से वेहोश किया। लड़के की आंखों पर पट्टी बांधी और ऊपर से कपड़ा डाल दिया। इससे किसी को यह सन्देह न रहे कि लड़का आंखों से देख सकता है। अब जादूगर ने वहां उपस्थित लोगों के सम्बन्ध में उस लड़के से पूछना शुरू किया। चारों ओर जमा हुई दर्शकों की भीड़ में जादूगर चक्कर लगा रहा था। वह लोगों का छाता, घड़ी, अंगूठी, शरीर का कोई अंग कपड़ा आदि पकड़ता और उस लेटे हुए लड़के से पूछता यह क्या है? लड़का तुरन्त उत्तर देता- यह अमुक चीज है। पुस्तकों के पृष्ट, भाषा घड़ियों का टाइम, रुपयों के सन् आदि अनेक बात पूछी गई और उनके ठीक ठीक उत्तर मिले। देखने वाले सभी लोग आश्चर्य में थे।

इस विद्या को जानने की हमें बड़ी उत्सुकता हुई। जिस जादूगर ने यह खेल दिखाया था उसके पीछे बहुत दिनों लगे रहे। पहले तो वह त्राटक आदि अभ्यासों में उलझा कर हमें टालता रहा, पर पीछे उसकी मुंह मांगी दक्षिणा देने पर सब भेद बताया। रहस्य यह था कि एक लड़के को एक पाठ माला रटा ली जाती है। प्रश्न और उत्तर पहले से ही निर्धारित होते हैं। जैसे 'यह क्या है?' इस प्रश्न का उत्तर होगा 'छाता'। यह क्या चीज है? इस प्रश्न का उत्तर होगा घड़ी। पूछने के शब्दों में थोड़ा हेर फेर करने से दर्शक तो कुछ समझ नहीं पाते पर वह लेटा हुआ लड़का भली प्रकार ध्यान रखता है और प्रश्न की भाषा के अनुसार उत्तर देता रहता है। ऐसी एक लम्बी प्रश्नोत्तरी हम अपनी 'मैस्मरेजम की अनुभव पूर्ण शिक्षा' पुस्तक में दे चुके हैं। इसके अतिरिक्त कोई भी चतुर व्यक्ति अपने ढंग की नई प्रश्नोत्तरी घड़ सकता है। इस विधि से केवल वही बातें बतलाई जा सकती हैं जो पूछने वाले को मालूम हों। जिन बातों का उत्तर उसे मालूम न होगा उसका उत्तर वह झूठ मूठ बेहोश होने का बहाना करके पड़ा हुआ लड़का भी न दे सकेगा।

नाखून पर स्याही लगा कर उसमें बालकों को देवी देवता दिखाने वाले तथा उनसे बात करा के प्रश्नों का उत्तर देने वाले हमने देखे हैं। इसी कार्य को कुछ लोग एक विशेष प्रकार की अँगूठी से, त्रिकाल दर्शी दर्पण नामक एक काली बिन्दी लगे हुये शीशे से भी करते हैं। जिस बालक के ऊपर यह प्रयोग किया जाता है उसे प्रयोग करने वाला अपनी सिद्धाई की धौंस के हथकंडे बता कर डरा देता है और बेचारा बालक जैसा कहो वैसा हाँ हां करने लगता है। यदि इस प्रकार दिखाया जाना सम्भव हो तो बड़ी उम्र के चतुर तांत्रिक एवं निडर बालकों पर भी वह प्रयोग होना चाहिये पर ऐसे बालकों से वे लोग सदा ही बचते रहते हैं।

चोर पकड़ने के लिये चावल पढ़कर देना आदि तरीके एक प्रकार की धमकी है जिससे डर कर लोग चोरी कबूल कर लेते हैं। एक चोर पकड़ने वाला तान्त्रिक ऐसा करता था कि जिन लोगों पर चोरी का शुभा होता था उन सबको बुलाता था और एक कोठे में लाल रंग से पुता हुआ देवता रख देता था। खुद उस कोठे के बाहर बैठ जाता था, अब जिस पर शुबा होता इनको एक एक करके कोठे में भीतर भेजता और उस देवता का स्पर्श करने को कहता। जो देवता को छूकर वापिस लौटता उसका हाथ सूंघ कर वह तान्त्रिक बताता कि यह चोर है या नहीं। इस तरकीब से वह असली चोर को पकड़

अलग लेजाकर चोरी इस शर्त पर कबूल करा लेता कि ली हुई चीज वापिस कर दे तो उसका नाम प्रकट न किया जायगा। चोर उस चीज को तान्त्रिक को वापिस कर देता. और वह उसे देदेता जिसकी कि वह चीज थी इस रीति से उसे बहुत यश और धन मिलता।

इसका रहस्य यह था कि देवता पर कच्चा लाल रंग पुता हुआ था जो उसे छूता था उसके हाथ में लाल रंग का कुछ न कुछ दाग लगा होता था। हाथ सूंघने के बहाने वह देख लेता था कि दाग है कि नहीं दाग होने पर निर्दोष समझा जाता था। पर जिस आदमी ने वास्तव में चोरी की होती थी वह देवता को इस ख्याल से छूता न था कि यहां कोई देखने वाला तो है नहीं इसलिये न छुऊं तो ही ठीक है। वह बिना छुए लौट आता था। उसके हाथ पर रंग का दाग न होता था, तान्त्रिक अकेले में उससे कहता था कि चोर तुम्हीं हो, चुपचाप या तो चीजें लौटा दो नहीं तो नाम प्रकट कर दिया जायगा। चोर सिटपिटा जाता और बदनामी से बचने के लिये चीजें देकर अपना पीछा छुडाता। परन्तु यह तरकीब भी सदा नहीं चल सकती। केवल उन्हीं पर चलती है जो चोर देवता और मन्त्र शक्ति पर विश्वास करते हों।

जासूसों के जरिये या किसी अन्य प्रकार से किसी आदमी के सम्बन्ध में बहुत सी जानकारी एकत्रित करना फिर उससे अचानक मुलाकात करके उन सब बातों को विद्या बल से बताना, इस रीति से कितने ही आदमी लोगों को आश्चर्य में डाल देते हैं और अपना उल्लू सीधा करते हैं।

अनेकों प्रकार के आश्चर्य

उपर की पंक्ति में कुछ चमत्कार का वर्णन किया है। इस तरह से सैकडों चमत्कार हमने देखे और उनके भेद मालूम किये हैं। जिनमें से अनेकों का तो अब स्मरण भी नहीं रहा है। जो याद हैं उनमें दो चार और लिखते हैं।

मंत्र बल से वस्तुएं मंगाने वाले महात्मा।

(१) एक बार एक गाँव में एक जमीदार के यहां एक महात्मा जी पधारे। जमीदार साहब ने बडी आवाभगत की। महात्मा जी के बारे में यह समाचार फैलाया गया कि वे बडे पहुँचे हुये सन्त हैं जो कहो सो मंगा सकते हैं। रात को जब गांव वाले बहुत से लोग एकत्रित बैठे हुए थे तो एक ग्रामीण ने कहा कि महाराज जी गरम खीर मंगाइये। महात्मा जी ने आंखें बन्द करके मन्त्र पढा और फिर सावधान होकर कहा— जाओ चौपाल में खीर आ गई। लोगों ने जाकर देखा तो सचमुच हांडी भरी खीर रखी थी। वह सबको प्रसाद रूप में दी गई। लोग आश्चर्य कर ही रहे थे कि एक काछी चिल्लाता हुआ आया कि चूल्हे पर रंधती हुई खीर की हांडी उड गई। उसे हांडी दिखाई गई तो उसने कहा यह मेरी ही हांडी है और मेरी आंखों के सामने चूल्हे पर से आकाश को उड गई थी। इस घटना के बाद योगीराज की भारी पूजा हुई। दस पन्द्रह दिन में करीब दो हजार रुपया भेंट का आ गया।

बहुत दिन बाद हमें पता चला कि जमींदार, खीर मंगाने वाला, काछी इन तीनों को साधु ने उस षडयन्त्र में शामिल किया है। उनकी परसी रखी गई थी भेंट में से इन तीनों ने भी हिस्सा बांटा था। वास्तव में खीर जमींदार के घर में बनी थी और लोगों के एकत्रित होने से पूर्व ही चौपाल में छिपा कर रख दी गई थी।

(२) एक साधू जी महाराज कहीं बाहर से आये और एक गांव में मरघट के पास रहने लगे उनकी निर्भयता से गांव वाले बहुत प्रभावित हुए और भोजन सामिग्री उनके लिये भेजने लगे। एक दिन जब कि गांव के बहुत से लोग बैठे हुये थे। कोई रास्ता गीर उधर से निकला, वह साधु जी के पास बैठ गया और इधर उधर की बातें करने लगा। बातों ही बातों में साधु के प्रति उसने कुछ कडुए और अपमान जनक शब्द कह दिये इस पर

सं० २००० वि० के लगभग अनेकों व्यक्ति अपने आपको निष्कलंक भगवान् का अवतार कहने लगे थे। और इसके लिये उन्होंने काफी प्रसिद्धि भी की थी। अब भी ऐसे तो कितने ही व्यक्ति हमारी दृष्टि में हैं जो अपने को प्रह्लाद का, सूरदास का, शंकराचार्य का अवतार बताते हैं। किन्तु सत्यता प्रकट करने के लिये एक भी तथ्य उनके पास नहीं है।

(५) एक योगिराज जलती हुई अग्नि पर स्वयं चलते थे और अपने पीछे पीछे और कई लोगों को चलाते थे पर इनमें से कोई भी न जलता था। इस क्रिया में मुख्य बात यह थी कि जिसे अग्नि पर चलना होता था उसके पैर धुलाते थे गीले पैरों से अग्नि के निकट तक पहुँचने पर वह दवा पैरों से चिपट जाती थी जो यहां मिट्टी के ऊपर फैला दी गई थी। इस दवा के प्रभाव से पैरों पर अग्नि का असर न होता था।

हमने उन योगिराज को चुनौती दी कि वे अग्नि के चारों ओर की जमीन भली प्रकार साफ कर लेने दें और पैर धुलाने के लिए जो पानी मंगाया जाय उसे लाने और देने का कार्य हमारे हाथ में रहे। यदि शर्त के साथ वे स्वयं अग्नि पर चलें या दूसरों को चलावें तो उन्हें पांच सौ रुपया दक्षिणा देने को तैयार हैं। पर इस चुनौती को स्वीकार करने के लिये तैयार न हुए।

(६) एक जगह एक अवधूत ऐसे देखे गये जो लोगों को मांगी हुई विचित्र विचित्र चीजें तुरन्त अपने देवता द्वारा मगा देते थे। उनके मुरीदों का कहना था कि उनके 'लेबड़े की विद्या' आती है। एक योगिनी उनके वश में है उससे जो चाहते हैं सो मंगा लेते हैं।

इस आश्चर्य जनक करतब का पता लगाने पर मालूम पडा कि चीजें मंगाने का आग्रह उनके मुरीद लोग ही करते थे। और वे चीजें पहले से ही मंगाकर तैयार रखी जाती थीं। बाजीगर जैसी सफाई से चीजों को मंगाता और गायब करता है वैसी ही सफाई उनको भी याद थी, जिसके बल पर वे दर्शकों की मांगी हुई चीज आकाश की तरफ हाथ करके तुरन्त मंगा लेते थे। किसी नये आदमी को प्रभावित करना होता तो अपरिचित बन कर के मुरीद ही अवधूत जी से झगडते चुनौती देते, और ऐसी चीज मांगते जिसका उस समय वहां मिलना कठिन होता। अवधूत जी तुरन्त वह चीज मंगाकर उनकी बोलती बन्द कर देते। बेचारा नया दर्शक इस दृश्य को देख कर ही पूर्णतया सतुष्ट हो जाता। उसे स्वयं कुछ मंगाने के लिये कहने की नौबत ही न आ पाती।

(७) एक पण्डित जी बड़े बड़े यज्ञ करते थे। उनके यज्ञों में विशेषता यह होती थी कि यज्ञ कुण्ड में से मन्त्र बल द्वारा अग्नि अपने आप प्रकट होती थी जनता पण्डित जी को बहुत पहुँचा हुआ महात्मा मानती थी।

भेद यह था कि हवन कुण्ड में रंग बिरंगे चौक पूरे जाते थे। हल्दी रोरी आटा आदि से उसे चित्र विचित्र किया जाता था। सफेद रेखायें जहां बनाई जाती थीं वहां बारूद में काम आने वाली पुटास फैला दी जाती थी। थोडा थोडा सफेद बूरा भी वहां बिछाया जाता था पूजा की थाली में तीन चार लौंगें तेजाब में डुबाकर पहले से ही रख ली जाती थी। उंगलियों को घी से चुपड लिया जाता था ताकि तेजाब की डूबी हुई लौंग छूने से कुछ हानि न हो।

पण्डित जी मन्त्रोच्चारण करते थे और जब अग्नि प्रकट करने का अवसर आता था तो उन तेजाब में डूबी हुई लौंगों को हवन कुण्ड में ऐसी जगह छोडते थे कि जहां पुटास और शकर बिछी रहती थी। तेजाब का स्पर्श होते ही बारूद जल उठती थी। बूरा उसके जलने में और भी सहायता देता था। कुण्ड में जहां तहां कपूर छोड रखा जाता था जो अग्नि को पकड लेता था और समिधाएं जलने लगती थी। इस प्रकार अग्नि देवता का मन्त्र बल से प्रकट करने का उन पण्डित जी को श्रेय मिल जाता था।

इसके अतिरिक्त अनेकों आडम्बर होते हैं एवं हो सकते हैं। उपरोक्त पंक्तियों के पाठकों को योगाडम्बर करने वालों की गतविधि का परिचय मिल सकता है।

——

प्रेस फण्ड के लिये सहायताएं

,, वी० पी० महरोत्रा बनारस
,, रामदेवसिंह सुखवानिया बजरग
,, भगवती प्रसाद पाण्डे ओम शिवनाम
बाबा प्रेमदास जी मउरी
श्री रामलाल गांगल देहली
चौ० कन्हैयालाल हुकमचन्द सागर
श्री लक्ष्मीनरायण वैद्य ऐजनाबाद
,, जगदीशप्रसाद गुप्ता बीसलपुर
,, वैजनाथ प्रसाद सुजालपुर स्टेट
,, परमलाल लुहार जबलपुर
श्रीमती शान्तीदेवी राठौर धीरपुर
ठा० जसवन्तसिंह जी हलपुरा
श्री नटवरलाल जमनादास अहमदाबाद
,, चिम्मनलाल हरीलाल जोशी अहमदाबाद
श्रीमती कौशिल्यादेवी जी नगीना
श्री भगवानदास गर्ग हैदराबाद
श्री शिवपूजनसिंह कुशवाहा खान खानापुर
पं० नामदास शर्मा सरधना
श्री मिट्ठनलाल गुप्त शामली
पं० शम्भूप्रसाद मिश्रा हृदयनगर
मन्त्री स्वतन्त्र कुटीर बसन्तपुर
श्री विश्वनाथ तिवारी कलकत्ता
,, पं० हरीनाथ जगन्नाथ सराफ खरगोन
,, ह० सुखदास रामप्रताप त्रिपाठी बीकानेर
,, पं० हरीनाथ बिहारीलाल चतुर्वेदी सेगांव
मिट्ठनलाल कुर्मी अगौना वाले
० सु[illegible]दीन प्यारेलाल आढतिया दमोह
वैनीप्रसाद पटेल खडेरी
बलवीरसिंह भदौरिया सीगनपुर
हरिस्वरूप शर्मा सैमद्वार
जयसिंह ओवरसियर मुजफ्फर नगर
शिवशंकरलाल त्रिपाठी कानपुर
[illegible]लचन्द जमुनालाल खवा
[illegible]रेन्द्रपालसिंह जयपुर
[illegible]टलाल जी मार्फत मिट्ठलाल शामली

१) ,, हजारीलाल जी दमोह
१) ,, अमृतप्रसाद सिंह कोलबीधा
१) ,, दिगविजयसिंह सेंगर मनकापुर
१) ,, बद्रीप्रसाद शर्मा बन्दाबन
१) मा० रामस्वरूप शर्मा खानक
१) श्री गुरुचरनलाल सचदेव लाहौर
१) ,, मदनगोपाल जी मुरादाबाद
१) ,, राधाकृष्ण अग्रवाल कसराबाद
१) बा० गजराजसिंह राजनांदगांव
१) श्री के० बलराजरेड्डी ,,
१) ,, रंगीलाल तैलकार त्त्री इलाहाबाद
१) बा० सीताराम गुप्त मच्छरगांव
१) बा० रामेश्वर प्रसाद सिंह मच्छरगांव
१) श्री रायजादा, शिवपुरकलां
१) पं० किशोरीलाल शास्त्री झांसी
१) श्री रघुराजसिंह डोह
१) ,, शंकरलाल भागीरथ पुरोहित दाभा
१) ,, हरिप्रसाद वर्मा सिकोहना
१) ,, सीताराम जी सथनी
१) ,, गुरुशरन जी मेहता ब्रह्मवार
१) ,, रूपनरायन यादव बेतिया
१) ,, रामावतार प्रसाद चुहडी
१) पं० लालजीलाल गोस्वामी बेतिया
१) श्री चुन्नीलाल भंवर श्री डूंगरगढ़
१) ,, श्रीरामकुनणमल ,,
१) ,, कोडामल डागा ,,
१) ,, रामचन्द्र डागा ,,
१) ,, मूलचन्द डागा ,,
१) ,, वृद्धिचन्द डागा ,,
१) पं० भीष्मदेव शर्मा ,,
१) श्री बद्रीनरायण राधेश्याम खबा
१) ,, लुदरुप्रसाद दास शिल्ला
१) ,, दासीराम आर्य, तिलहर
३) डाक्टर गुप्ता धार स्टेट
२) श्री उपेन्द्रकुमार बनवासी, धार

———

साधना के पथ पर

(लेखक—महावीरप्रसाद विद्यार्थी, साहित्य-रत्न)

[१]

सफल साधना होगी साधक! बढ़े चलो पथ पर अविचल।

विश्व बने परिवार तुम्हारा, ऐसा प्रेम-प्रसार करो,
ठुकराते हो व्याकुल होकर, क्यों जीवन को हारों को,
विजय-वैजयन्ती हैं ये ही, मानव इनको प्यार करो,
इन उत्ताल तरंगों को, इन तूफानों को चीर चलो,
पार करो भवसागर को, भुजदण्डों को पतवार करो,

पङ्कमयी जीवन सरिता में हो नव जीवन का कल-कल।
सफल साधना होगी साधक! बढ़े चलो पथ पर अविचल॥

[२]

आत्म-शुद्धि के लिये सत्य की ज्वाला में जलना होगा,
भय कैसा, यदि तलवारों की धारों पर चलना होगा,
पाओगे अक्षय विभूति जब त्याग करोगे तुम मानव,
सौरभ-मुक्त सुमन बनने को कांटों में पलना होगा,
प्रति क्षण ध्यान रहे-जीने के लिए तुम्हें मरना होगा,

पर सेवा वेदी पर धरना होगा तन-मन-धन निश्छल।
सफल साधना होगी साधक! बढ़े चलो पथ पर अविचल॥

[३]

आत्म-शक्ति उद्बुद्ध करो, यह दरिद्रता जल जाएगी,
पल भर में हिम राशि तुल्य सारी बाधा गल जाएगी,
शैल तुम्हारे जाने को तव हृदय खोल देंगे अपना,
पलकें सरिता वीर! तुम्हारे स्वागत हेतु बिछाएगी,
आकर स्वयं सफलता तुमको विजय माल पहनाएगी,

निश्छल अन्तस्तल में झरना मधुर शांति निर्झर अविरल।
सफल साधना होगी साधक! बढ़े चलो पथ पर अविचल॥